भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 | **सितम्बर** 2008 | **अंक** 9

जन्म : 11 नवम्बर 1918 निधन : 30 अगस्त 2008

प्रमुख उद्योगपति, समाजसेवी, विचारक और शोधकर्ता **कृष्णकुमार बिरला** का शनिवार, 30 अगस्त 2008 की सुबह कोलकाता में निधन हो गया।

के०के० बिरला की पत्नी मनोरमा देवी बिरला का महीना भर पहले ही निधन हुआ था। बिरलाजी की तीन पुत्रियाँ नंदिनी नोपानी, सरोज पोद्दार और शोभना भरतिया हैं।

घनश्यामदास बिरला के पुत्र कृष्ण कुमार बिरला का जन्म राजस्थान के पिलानी में 11 नवम्बर 1918 को हुआ था। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय व पंजाब विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। 3 जुलाई 1941 को मनोरमा देवी बिरला से उनका विवाह हुआ था। बिरलाजी 1940 में स्थापित भारतीय चीनी उद्योग के संस्थापकों में एक थे। उन्होंने चीनी उद्योग, उर्वरक उद्योग, रासायनिक उद्योग, भारी इंजीनियरिंग उद्योग, टेक्सटाइल्स उद्योग शिपिंग उद्योग, समाचारपत्र आदि में अपना प्रमुख योगदान दिया।

वह उद्योगपति के अलावा एक जाने-माने सांसद भी थे और 18 वर्षों तक राज्यसभा के सदस्य भी रहे। वह 1961 में कोलकाता के शेरिफ बने। 1971 में उन्हें पांडिचेरी विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की थी। उन्होंने भारतीय शुगर मिल एसोसिएशन, फिक्की और इण्डियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रमुख के रूप में भी कार्य किया। **उन्होंने के०के० बिरला फाउण्डेशन की स्थापना की जो भारतीय साहित्य, वैज्ञानिक अनुसन्धान और भारतीय दर्शन के क्षेत्र में वार्षिक पुरस्कार देता है।**

(सम्बन्धित समाचार पृष्ठ 2 पर)

हिमाद्रि-तुंग-शृंग से....

अपनी स्वतंत्रता के 62वें वर्ष में प्रवेश करते हुए हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने परम्परागत तरीके से लालकिले पर ध्वजारोहण किया और समग्र राष्ट्रीय विकास की चर्चा करते हुए देश के समक्ष उपस्थित समस्याओं का उल्लेख भी किया। ठीक इसी समय पश्चिमोत्तर हिमालय क्षेत्र के जम्मू-कश्मीर संभाग में उभरते विरोधाभासी संघर्षों की चुनौतियों ने समूचे देश की जनता को चिंतित कर दिया। यह समस्याएँ पिछले दो महीनों से जारी थीं जो क्रमश: विकट से विकटतर होती जा रही थीं किन्तु सरकार की 'वेट एण्ड वाच' नीति ने उसे विकराल बना दिया। एक ओर प्रशासनिक कर्फ्यू का उल्लंघन करते हुए तिरंगा झण्डा हाथ में लिये हजारों हजारों स्त्री-पुरुष-बच्चे उफनती तवी नदी को पार कर आगे बढ़ रहे थे तो दूसरी ओर राष्ट्रीय-पर्व का बहिष्कार करते लोग पाकिस्तानी झण्डा लहराते हुए भारत-विरोधी नारे लगा रहे थे। यह दृश्य देखकर अपने स्वातंत्र्य-संघर्ष की याद आना स्वाभाविक था, जब हिमालय से कन्याकुमारी तक पूरा देश एकात्म हो चुका था। धर्म-भेद, जाति-भेद, भाषा-भेद, प्रान्त-भेद आदि सारे भेदभाव भुलाकर इस विराट् जन-गण ने ब्रिटिश-साम्राज्यवाद से टक्कर ली थी और अंतत: अपना लक्ष्य, अपनी आजादी हासिल की थी। सम्भवत: इसी सांस्कृतिक एकात्मता को लक्ष्य करते हुए रवीन्द्र-नज़रूल, सुब्रह्मण्यम् भारती, प्रसाद-निराला-इकबाल जैसे महाकवियों की रचनाभूमि पर स्थापित हो गया भारत-राष्ट्र। कोटि-कोटि भारतीय जन जागृत हो उठा, मुखर हो उठा। तत्कालीन वैश्वक-परिदृश्य में हमारे इस अपराजित सांस्कृतिक-अस्तित्व को रेखांकित करते हुए अल्लामा इक़बाल ने लिखा—

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़मां हमारा।

किन्तु आज स्थितियाँ विपरीत हैं, विरोधाभासों से भरी हुई हैं। वोट की राजनीति करने वाले दलों और प्रान्तीय अथवा केन्द्रीय सरकारों की निर्णय-क्षमता समाप्तप्राय है। इस विकट परिस्थिति में पुन: जनता को आगे आना होगा। धर्म, जाति, भाषा, प्रान्त के भेद-भावों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय-संकल्प दुहराने होंगे। अन्यथा इक़बाल के ही शब्दों में—

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालों,
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।

खेल-खेल में....

तिरंगा हाथ में लहराते भारत के युवा खिलाड़ियों का दल रंग-बिरंगी रोशनी से नहाये स्टेडियम के बीच शान से गुज़र रहा था, मौका था चीन की राजधानी बीजिंग में आयोजित ओलम्पिक खेलों (8 अगस्त 08 से 24 अगस्त 08) के समारंभ का। प्रत्येक चार वर्ष बाद होने वाले ओलम्पिक-समारोह में समग्र विश्व के सभी प्रतिभागी देशों की भावनाओं का उफान दिखलायी पड़ता है। लगभग एक अरब दर्शकों के बीच आयोजित इस खेलपरक-सांस्कृतिक-उत्सव में हर देश की युवा प्रतिभाओं ने अपने जौहर दिखलाये और विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजय-श्री प्राप्त कर पदक हासिल किये। *शेष पृष्ठ 2 पर*

डॉ० के०के० बिरला सिर्फ महान उद्योगपति ही नहीं, बल्कि एक सम्मानित संसद सदस्य, परोपकारी इन्सान और प्रमुख विद्वान भी थे। उनके निधन से देश ने एक बहुआयामी व्यक्तित्व खो दिया। **—प्रतिभा पाटिल,** *राष्ट्रपति*

डॉ० बिरला भारतीय उद्योग जगत का नेतृत्व करने वाली महान हस्तियों में एक थे। उनके निधन से ऐसी रिक्तता पैदा हो गई है, जिसे भरा नहीं जा सकता। वह शीर्ष उद्योगपति ही नहीं, देश के सार्वजनिक जीवन की एक हस्ती भी थे। देश के विकास में उनका व्यापक योगदान रहा। लगातार 18 वर्ष तक राज्यसभा सांसद के तौर पर भी उनकी भूमिका चिरस्मरणीय रहेगी।

—डॉ० मनमोहन सिंह, *प्रधानमंत्री*

बिरलाजी के निधन से देश का एक मजबूत उद्योग स्तम्भ ढह गया। वह समर्पित, कर्मठ और निष्ठावान उद्योगपति थे। देश की उन्नति में उनका योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। डॉ० बिरला जैसे 'विरले' कम ही होते हैं। मेरे लिए भी यह अपूरणीय क्षति है। उनकी स्मृति हमेशा प्रेरणा देती रहेगी।

—अटलबिहारी वाजपेयी, *पूर्व प्रधानमंत्री*

बिरला परिवार और बजाज परिवार के बीच पिछले 70 वर्षों से भी अधिक का सम्बन्ध है। यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि हम एक ही परिवार हैं। बिरलाजी का चला जाना हमारे लिए बहुत बड़ी क्षति है।

—राहुल बजाज, *चेयरमैन, बजाज आटो*

आदर्शवादी युग के नक्षत्र का बुझना

डॉ० कृष्णकुमार बिरला का निधन भारतीय उद्योग जगत के समाप्तप्राय: आदर्शवादी युग के एक नक्षत्र का बुझना है। उस युग में जीवनदृष्टि की ठोस लौकिकता एक आध्यात्मिक और नैतिक दृढ़ता के साथ सतत मौजूद थी। और उसके स्पर्श से इस्पात से लेकर मीडिया तक के उपक्रम और उत्पाद एक सहज राष्ट्रीय महत्त्व का बोध कराते थे। विगत वर्ष प्रकाशित अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा था—

''...अब मैं लगभग नब्बे का हो चला हूँ। मैं देख सकता हूँ कि परिस्थितियाँ तब से अब तक कितने नाटकीय ढंग से बदल गई हैं। जिन्होंने महात्माजी की दांडी यात्रा..., उनका सत्याग्रह का 1930 में आह्वान और भारत छोड़ो आन्दोलन देखा-सुना, उनमें से अधिकतर अब नहीं रहे...(पर उसी के) फलस्वरूप आकाश से टपकी ओस की आनन्ददायक बूँदों सरीखी आजादी का यह वरदान हमने पाया।''

....''एक संस्थान को चलाना भी एक कला है...उसके शीर्ष पर जो सिद्धान्त विराजमान है, वह है विकेन्द्रीकरण। मैं इस सिद्धान्त पर पूरी आस्था रखता हूँ।''

एक दीर्घ, रचनात्मक और सुखद दाम्पत्य से समृद्ध जीवन जी चुके डॉ० बिरला अन्त तक आशावादी, भविष्यमुखी और औघड़दानी रहे। अपनी पीढ़ी के कई अन्य जनों की तरह वे अतीतमुखी, नैराश्यमय और अप्रासंगिक नहीं बने। भारतीय परम्परानुसार प्रकृति अथवा मनुष्यजगत से कुछ ग्रहण (प्राप्ति) से पहले कुछ अर्पण करने की यज्ञ-भावना उनके संस्कारी आचरण में यहाँ से वहाँ तक हमेशा दिखाई देती थी। कारपोरेट जगत में कई नव-प्रविष्ट सितारों की अधीर बर्बरता की बजाय उनके व्यवहार और लेखन में एक मुग्धकारी सौजन्यता और विनम्रता उन्हें विशिष्ट बनाती थी।

— मृणाल पाण्डे

केके बाबू, बनारस और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

देश के जानेमाने बिरला परिवार का बनारस से जुड़ाव जगजाहिर है। पर बात अगर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और महामना मालवीय की हो तो पिता-पुत्र यानी जीडी बिरला और केके बिरला का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। पिता घनश्यामदास बिरला तो मालवीय भक्त थे ही पर पुत्र केके बिरला जब तक जीवित रहे अपने जानने वालों से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का हालचाल लेते रहे।

उद्योगपति तो देश में बहुतेरे हैं पर शिक्षा, संस्कृति, धर्म-अध्यात्म और स्वाधीनता संघर्ष में बिरला परिवार के योगदान का कोई जवाब ही नहीं है। बीएचयू के छात्र व अध्यापक रहे डॉ० हरिवंश राय बच्चन को केके बिरला फाउण्डेशन का पहला सरस्वती सम्मान मिला। यहीं के छात्र रहे प्रख्यात कवि शिवमंगल सिंह सुमन और आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा को व्यास सम्मान, संस्कृत के विद्वान प्रो० रेवा प्रसाद द्विवेदी को केके बिरला की ओर से वाचस्पति सम्मान दिया गया।

बनारस के लब्धप्रतिष्ठित प्रकाशक पुरुषोत्तमदास मोदीजी से उनकी गहरी आत्मीयता थी। उनके साथ बिताये पलों को मोदीजी ने छापने की योजना भी बनाई थी पर उनके असमय निधन से लगता है उनका यह सपना पूरा नहीं हो पाया। उनके ज्येष्ठ पुत्र अनुराग मोदी बताते हैं कि पिताजी से केके बिरलाजी की बातें तमाम विषयों, सन्दर्भों, बनारस शहर और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वगैरह को लेकर होती रहती थीं। पिताजी की उपरोक्त योजना के अनुरूप सामग्री की तलाश जारी है, मिलने पर इनका प्रकाशन अवश्य किया जायेगा।

पृष्ठ 1 का शेष

इस ओलम्पिक में भारत के निशानेबाज युवक अभिनव बिंद्रा ने अपनी अचूक निशानेबाजी का प्रदर्शन कर स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। अभिनव की इस विजय ने हमारी राष्ट्रीय-गरिमा को सम्मानित किया है। इसी क्रम में फ्रीस्टाइल कुश्ती के पहलवान नौजवान सुशीलकुमार ने 66 कि.ग्रा. भार वर्ग की कुश्ती में कांस्य पदक जीता और मुक्केबाजी की प्रतिस्पर्धा में वीर विजेन्द्र ने 75 कि.ग्रा. भार वर्ग में अपने प्रतियोगी को पछाड़कर कांस्य पदक प्राप्त किया। देश को सम्मान दिलाने वाली इन युवा प्रतिभाओं को 'भारतीय वाङ्मय' की बधाई और अभिनन्दन।

सर्वेक्षण

साहित्य-संस्कृति और शिक्षा के संकल्प के बावजूद राष्ट्रीय घटनाएँ उद्वेलित करती हैं जिनका सीधा प्रभाव साहित्य और संस्कृति पर पड़ता है। इन्हीं के बीच शिक्षा प्राप्त करते बच्चों और युवकों के मनोजगत का निर्माण होता है। अत: समांतर घटती घटनाओं-दुर्घटनाओं, परिस्थितियों की ओर से आँख मूँद लेना नामुनकिन है, इसीलिए वैश्वक-विहगावलोकन की भी आवश्यकता है।

इधर इसी बीच आरम्भ हो चुका है 14वाँ दिल्ली पुस्तक-मेला, जो दिल्ली के प्रगति मैदान में 30 अगस्त से 7 सितम्बर तक जारी रहेगा। पुस्तक-प्रकाशन, व्यवसाय के क्रम में लेखक-पाठक और प्रकाशक के साथ जुड़ने का यह महत्त्वपूर्ण अवसर होता है। इन सबकी एकत्र-सहभागिता युगबोध का संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत करती है। महाकवि कालिदास के शब्दों में—

'वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।'

इत्यलम्...!

—परागकुमार मोदी

सच्चे मित्रों के चुनाव के बाद सर्वप्रथम एवं प्रधान आवश्यकता है, उत्कृष्ट पुस्तकों का चुनाव। —कोल्टन

कालेज की पढ़ाई

प्रेमचंद

मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है, जिसमें कहीं-कहीं गढ़े तो हैं; पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खड्डों का स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाड़ों की सैर के शौकीन हैं, उन्हें तो यहाँ निराशा ही होगी। मेरा जन्म संवत् 1937 में हुआ। पिता डाकखाने में क्लर्क थे, माता मरीज़, एक बड़ी बहन भी थीं। उस समय पिताजी शायद 20/- पाते थे। 40/- तक पहुँचते-पहुँचते उनकी मृत्यु हो गई। यों वह बड़े विचारशील, जीवन-पथ पर आँखें खोलकर चलनेवाले आदमी थे; लेकिन आखिरी दिनों में एक ठोकर खा ही गये और खुद तो गिरे ही थे, उसी धक्के में मुझे भी गिरा दिया। पन्द्रह साल की अवस्था में उन्होंने मेरा विवाह कर दिया और विवाह करने के साल ही भर बाद परलोक सिधारे। उस समय मैं नवें दरजे में पढ़ता था। घर में मेरी स्त्री थी, विमाता थीं, उनके दो बालक थे, और आमदनी एक पैसे की नहीं, घर में जो कुछ लेई-पूँजी थी, वह पिताजी की छः महीने की बीमारी और क्रिया-कर्म में खर्च हो चुकी थी। और मुझे अरमान था, वकील बनने का और एम०ए० पास करने का। नौकरी उस ज़माने में भी इतनी ही दुष्प्राप्य थी, जितनी अब है। दौड़-धूप करके शायद दस-बारह की कोई जगह पा जाता; पर यहाँ तो आगे पढ़ने की धुन थी—पाँव में लोहे की नहीं, अष्टधातु की बेड़ियाँ थीं और मैं चढ़ना चाहता था—पहाड़ पर।

पाँव में जूते न थे, देह पर साबित कपड़े न थे। मँहगी अलग—10 सेर के जव थे। स्कूल से साढ़े तीन बजे छुट्टी मिलती थी। काशी के क्विस कॉलेज में पढ़ता था। हेडमास्टर ने फ़ीस माफ़ कर दी थी। इम्तहान सिर पर था और मैं बाँस के फाटक पर एक लड़के को पढ़ाने जाता था। जाड़ों के दिन थे। चार बजे पहुँचता था। पढ़ाकर छः बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था। तेज़ चलने पर भी आठ बजे से पहले घर न पहुँच सकता और प्रातःकाल आठ ही बजे फिर घर से चलना पड़ता था, नहीं तो वक्त पर स्कूल न पहुँचता। रात को भोजन करके कुप्पी के सामने पढ़ने बैठता और न जाने कब सो जाता। फिर भी हिम्मत बाँधे हुए था।

मैट्रिकुलेशन तो किसी तरह पास होगया; पर आया सेकेण्ड डिवीज़न में और क्विस कॉलेज में भरती होने की आशा न रही। फ़ीस केवल अव्वल दरजे वालों ही की मुआफ़ हो सकती थी। संयोग से उसी साल हिन्दू कॉलेज खुल गया था। मैंने इस नये कालिज में पढ़ने का निश्चय किया। प्रिंसिपल थे—मि० रिचर्डसन। उनके मकान पर गया। वह पूरे हिन्दुस्तानी वेश में थे। कुर्ता और धोती पहने फ़र्श पर बैठे कुछ लिख रहे थे। मगर मिजाज़ को तबदील करना इतना आसान न था। मेरी प्रार्थना सुनकर—आधी ही कहने पाया था—बोले कि घर पर मैं कॉलेज की बात-चीत नहीं करता, कॉलेज में आओ। खैर, कॉलेज में गया। मुलाक़ात तो हुई; पर निराशाजनक। फ़ीस मुआफ़ न हो सकती थी। अब क्या करूँ। अगर प्रतिष्ठित सिफ़ारिशें ला सकता, तो शायद मेरी प्रार्थना पर कुछ विचार होता; लेकिन देहाती युवक को शहर में जानता ही कौन था?

रोज़ घर से चलता कि कहीं से सिफ़ारिश लाऊँ, पर 12 मील की मंजिल मारकर शाम को घर लौट आता। किससे कहूँ! कोई अपना पुछत्तर न था।

कई दिनों के बाद एक सिफ़ारिश मिली। एक ठाकुर इंद्रनारायण सिंह हिन्दू कॉलेज की प्रबन्धकारिणी सभा में थे। उनसे जाकर रोया। उन्हें मुझ पर दया आ गई। सिफ़ारिशी चिट्ठी दे दी। उस समय मेरे आनन्द की सीमा न थी। खुश होता हुआ घर आया। दूसरे दिन प्रिंसिपल से मिलने का इरादा था; लेकिन घर पहुँचते ही मुझे ज्वर आ गया। और दो सप्ताह से पहले न हिला। नीम का काढ़ा पीते-पीते नाक में दम आ गया। एक दिन द्वार पर बैठा था कि मेरे पुरोहित जी आ गये।

मेरी दशा देखकर समाचार पूछा और तुरन्त खेतों में जाकर एक जड़ खोद लाये और उसे धोकर सात दाने काली मिर्च के साथ पिसवाकर मुझे पिला दिया। उसने जादू का असर किया। ज्वर चढ़ने में घंटे ही भर की देर थी। इस औषधि ने, मानो, जाकर उसका गला ही दबा दिया। मैंने पण्डितजी से बार-बार उस जड़ी का नाम पूछा; पर उन्होंने न बताया। कहा—नाम बता देने से उसका असर जाता रहेगा।

एक महीने के बाद मैं फिर मि० रिचर्डसन से मिला और सिफ़ारिशी चिट्ठी दिखाई। प्रिंसिपल ने मेरी तरफ़ तीव्र नेत्रों से देखकर पूछा—इतने दिनों कहाँ थे?

''बीमार हो गया था?''

''क्या बीमारी थी?''

मैं इस प्रश्न के लिए तैयार न था। अगर ज्वर बताता हूँ, तो शायद साहब मुझे झूठा समझें। ज्वर मेरी समझ में हलकी-सी चीज़ थी। जिसके लिए इतनी लम्बी गैर हाजिरी अनावश्यक थी। कोई ऐसी बीमारी बतानी चाहिए, जो अपनी कष्टसाध्यता के कारण दया को भी उभारे। उस वक्त मुझे और किसी बीमारी का नाम याद न आया। ठाकुर इंद्रनारायण सिंह से जब मैं सिफ़ारिश के लिये मिला था, तो उन्होंने अपने दिल की धड़कन की बीमारी की चर्चा की थी। वह शब्द मुझे याद आ गया।

मैंने कहा—पैलपिटेशन ऑफ़ हार्ट सर।

साहब ने विस्मित होकर मेरी ओर देखा और कहा—अब तुम बिल्कुल अच्छे हो?

''जी हाँ।''

''अच्छा प्रवेश-पत्र भर कर लाओ।''

मैंने समझा बेड़ा पार हुआ। फार्म लिया, खानेपुरी की और पेश कर दिया। साहब उस समय कोई क्लास ले रहे थे। तीन बजे मुझे फार्म वापस मिला। उस पर लिखा था, इसकी योग्यता की जाँच की जाय।

यह नई समस्या उपस्थित हुई। मेरा दिल बैठ गया। अंग्रेजी के सिवा और किसी विषय में पास होने की मुझे आशा न थी, और बीजगणित और रेखागणित से तो मेरी रूह काँपती थी। जो कुछ याद था, वह भी भूल-भाल गया था; लेकिन दूसरा उपाय ही क्या था.....

[*विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा सद्यः प्रकाशित कथाशिल्पी प्रेमचंद द्वारा सम्पादित 'हंस-आत्मकथा अंक (1932)' से*]

किताबों में

झील कहाँ है, किताबों में है वह
शेर किताबों में रोज दहाड़े
कूक रही है किताबों में कोयल
बच्चे किताबों में गाते पहाड़े
ऊँचा पहाड़ किताबों में दीखता
शोर मचाती नदी बहती है
नानी किताबों में कहती कहानियाँ
दादी किताबों में क्या कहती है
सैर किताबें कराती हैं हमको
नीम का बौर किताबों में झरता
उड़ता तिरंगा किताबों में सुन्दर
देखते ही मन मौजों से भरता
सूर किताबों में राग से गाते
मीरा निराला किताबों में आये
पंत रहीम किताबों में बोलते
तुलसी किताबों में ही तो हैं छाये
खेत किताबों में, रेत किताबों में
पेड़ किताबों में, बाग हैं फूले
बाँध किताबों में, सिंधु किताबों में
झूला किताबों में, मेघ को छू ले
देश विदेश किताबों में है सब
मित्र किताबों में, शत्रु वहीं हैं
ज्ञानी किताबों में, नेता किताबों में
क्या है, किताबों में जो कि नहीं है
प्राण किताबें हैं, जीवन साथी हैं
ये जो नहीं तो अधूरे ही हैं हम
माता पिता का भी स्नेह किताबों में
साँस यही हैं, हमारी यही दम
गाएँ इन्हीं को, सुनाएँ इन्हें हम
साथ कभी न किताबों का छोड़ें
जी को दुलारतीं, करतीं बड़ा हमें
इनसे कभी हम नाता न तोड़ें।

—डॉ० श्रीप्रसाद

हिन्दी : विश्वभाषा की ओर

— शुभदा वांजपे

आज का युग सूचना-प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का युग है। आज हिन्दी का महत्त्व आकलन वैश्विक दृष्टि से भी करने की आवश्यकता है क्योंकि विस्तृत मानवीय सन्दर्भों में हिन्दी ने राष्ट्रीयता की सीमा को लाँघकर पूरे विश्व में अपनी महत्ता सिद्ध की है। एक सम्पर्क-भाषा के रूप में हिन्दी हमारी संस्कृति के व्यापक सम्प्रेषण में उपयोगी सिद्ध हुई है। मॉरीशस, सूरीनाम, इंग्लैण्ड, फ्रांस आदि देशों में भारतीय संस्कृति की अस्मिता को प्रेषित करने में इस भाषा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इसी कारण विश्व में यूनेस्को तथा अन्य अनेक सांस्कृतिक संगठन एवं विश्वविद्यालय हिन्दी के व्यापक महत्त्व को स्वीकार करने लगे हैं। आज भारतीय मूल के 1 करोड़ 20 लाख लोग विश्व के 132 देशों में निवास करते हैं। अंग्रेजी और चीनी के बाद विश्व की भाषाओं में हिन्दी को तीसरा स्थान प्राप्त है। प्रवासी भारतीय परस्पर हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं तथा हिन्दी को अपनी अस्मिता से जुड़ा हुआ मानते हैं। इनके अतिरिक्त भारत के पड़ोसी देशों जैसे नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और श्रीलंका में हिन्दी बोलने और समझनेवालों की संख्या अधिक है। विदेशों के लगभग 144 विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षा की व्यवस्था है। यूरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया, बल्गेरिया, जर्मनी, स्वीडन, स्पेन, पोलैण्ड, फ्रांस, हंगरी, जापान आदि देशों के स्तरीय विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पठन-पाठन एवं शोध कार्य की समुचित व्यवस्था है। आज हिन्दी के महान कवि जैसे तुलसी, सूरदास, कबीर तथा प्रेमचंद तथा अन्य महान लेखकों की कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद तथा तुलनात्मक शोध कार्य किया जा रहा है। जर्मनी के 17 विश्वविद्यालयों में आज हिन्दी के स्वतन्त्र विभाग हैं तथा अमरीका के 33 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। आज अमरीका ने शालेय शिक्षा में हिन्दी को वैकल्पिक भाषा के रूप में समाविष्ट किया है। भारतीय शिक्षा को विदेश में मुद्रित कर रही एजुकेशनल कंसलटेंट इण्डिया लिमिटेड (एडसिल) के अनुसार अमरीका के दो राज्यों साउथ कैरोलिनी और कनेक्टिक ने भारत से हिन्दी पढ़ानेवाले शिक्षकों को आमंत्रित किया है।

देश-विदेश में हिन्दी की महत्ता और विस्तार की दृष्टि से तथा इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा घोषित कराने के उद्देश्य से पिछले 36 वर्षों में आठ विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन कियागया। इसके लिए भारत, मारीशस, त्रिनिदाद, इंग्लैण्ड, सूरीनाम तथा न्यूयॉर्क आदि देशों का चयन किया गया। इन सम्मेलनों में हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति जनसंचार के माध्यम और हिन्दी, प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन की भाषा, विश्व में हिन्दी के पठन-पाठन की व्यवस्था, विश्व में हिन्दी की साहित्यिक उपलब्धियाँ आदि पर गहन विचार-विमर्श हुआ। अक्टूबर 1977 में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने उस समय विदेशमंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी में अपना भाषण देकर हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा घोषित कराने का सूत्रपात कर दिया था।

आज ब्रिटेन में हिन्दी का कार्य तीव्र गति से हो रहा है। आज वहाँ हिन्दी पढ़ने पढ़ानेवालों का, हिन्दी प्रेमियों का, हिन्दीभाषियों का, हिन्दी लेखकों का, संस्थाओं का एक नेटवर्क-सा बन गया है। अनेक साहित्यिक गोष्ठियाँ, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। दफ्तर, अस्पताल, पुस्तकालय, बैंक, सिनेमाघर, नाट्यशाला, नेटवर्क, दूरदर्शन आदि में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। ब्रिटेन का हिन्दी साहित्य-सृजन अधिक गतिशील है। उषाराजे सक्सेना, डॉ० सत्येन्द्र श्रीवास्तव, प्राण शर्मा, कीर्ति चौधरी, अचला शर्मा, गौतम सचदेव, दिव्या माथुर आदि नाम ब्रिटेन में हिन्दी लेखन के लिए विख्यात हैं। ब्रिटेन के पुस्तकालयों में एथनिक सेक्शन में प्रसिद्ध लेखकों के अतिरिक्त ब्रिटेन के हिन्दी लेखकों की हिन्दी कृतियाँ उपलब्ध हैं।

पत्र-पत्रिकाओं में यू०के० से 'पुरवाई' और 'अमरदीप', 'चेतक', 'प्रवासिनी', 'हिन्दी' आदि, अमेरिका से 'विश्वा', 'विश्व-विवेक', 'सौरभ', 'भारती', नार्वे से 'स्पाईल-दर्पण' एवं 'शांतिदूत', फिजी से 'लहर' व 'संस्कृति', मॉरीशस से 'आक्रोश', 'मुक्ता', 'रीशस इण्डियन', 'मॉरीशस मित्र', 'जनवाणी', 'रिमझिम', सूरीनाम से 'सेतुबंध', 'सरस्वती', 'भरतोदय', कैनेडा से 'हिन्दी चेतना' और आस्ट्रेलिया से 'चेतना' आदि पत्रिकाएँ निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं। ये पत्रिकाएँ देश-विदेश के साहित्यकारों को संयुक्त मंच देती हैं।

हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय रूप प्रदान करने में मॉरीशस की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा की दृष्टि से मारीशस के सभी माध्यमिक स्कूलों में हिन्दी कैम्ब्रिज स्कूल सर्टिफिकेट तक पढ़ाई जाती है। विश्वविद्यालय में बी०ए० हिन्दी, एम०ए० हिन्दी की शिक्षा उपलब्ध है। अनेक शोधार्थी हिन्दी में शोधकार्य कर रहे हैं। मॉरीशस में 'हिन्दी प्रचारिणी सभा', 'आर्य सभा मॉरीशस', 'हिन्दी लेखक संघ', 'हिन्दी अकादमी', 'साहित्य संवाद', 'इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद्' आदि स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ हैं। रेडियो, दूरदर्शन से हिन्दी कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है। मॉरीशस में हिन्दी साहित्य की समस्त विधाओं में सर्जनात्मक कार्य अव्याहत रूप से हो रहा है। इन साहित्यकारों में श्री जयनारायण राय, अभिमन्यु अनत, जिनका 'लाल पसीना' उपन्यास विश्व साहित्य की धरोहर है, वेणी माधव रामखेलावन, रसपुंज, भगत, पूजानंद नेमा, लीलाधर, सुमति बुधन आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

फिजी में सरकारी कार्यों में अंग्रेजी के साथ हिन्दी का प्रयोग आवश्यक है। फिजी सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रसारित कृषि एवं मौसम सम्बन्धी सूचनाएँ, पोस्टर हिन्दी में निकाले जाते हैं। फिजी के बाजारों में दुकानों के नाम-पट्ट अंग्रेजी के साथ हिन्दी में लिखे जाते हैं।

सूरीनाम में मंत्री बनने के लिए हिन्दी जानना अनिवार्य है। न्यूजीलैण्ड में हिन्दी चलचित्र विशेष लोकप्रिय है। पाकिस्तान के लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं में हिदी एक वैकल्पिक विषय है।

आज विभिन्न देश भारतीय मूल के बहुसंख्यक निवासियों वाले क्षेत्रों में व्यावसायिक कारोबार के लिए हिन्दी का व्यवहार करते ही हैं, सम्पर्क भाषा के रूप में भी इसका प्रयोग करते हैं। इंग्लैण्ड, कनाडा, अमेरिका, नार्वे, स्वीडन, फिजी, त्रिनिदाद, मलेशिया, सिंगापुर, हांगकांग आदि देशों में हिन्दी फिल्मों के साथ उसके कैसेटों का बाजार बहुत बड़ा है। अत: विश्वात्मक सन्दर्भ में हिन्दी अपनी व्यावसायिकता को सिद्ध कर चुकी है।

आधुनिकतम संचार माध्यम के साथ भी हिन्दी ने अपना सम्बन्ध जोड़ लिया है। इंटरनेट पर आज हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध हो रही हैं। इस प्रकार विश्व में अंग्रेजी का वर्चस्व तोड़कर स्वयं को स्थापित करने में हिन्दी आज पूर्णत: सक्षम और समर्थ है इसमें सन्देह नहीं।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

ओड़िशा के संत कवियों की सुदीर्घ परम्परा

ओड़िशा जगन्नाथ-भूमि है। महाप्रभु श्रीजगन्नाथ इस प्रदेश के कण-कण में व्याप्त हैं। इस प्रदेश की विशिष्ट पहचान 'जगन्नाथ धर्म-संस्कृति' के रूप में सामने आती है। हम इसे वैष्णव धर्म-संस्कृति का विशेष पर्याय कह सकते हैं। परन्तु यहाँ उल्लेखनीय यह है कि 'जगन्नाथ धर्म-संस्कृति' वैष्णव और बौद्ध धर्म-संस्कृति से ही अधिक अनुप्रेरित हुई प्रतीत होती है।

इस प्रदेश के वैष्णव धर्म पर 'तंत्र' का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है, परन्तु वह बौद्ध धर्म के 'वामाचार तंत्र' से सर्वथा भिन्न है। हालाँकि बौद्ध धर्म के 'शून्यवाद' का बहुत ही सहज मिश्रण जगन्नाथ धर्म-संस्कृति में हो चुका है फिर भी इसके मूल सूत्र वैदिक सनातन धर्म के भीतर ही हैं। न केवल संत साहित्य, प्रत्युत सम्पूर्ण ओड़िया साहित्य पर जगन्नाथजी का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई देता है। ओड़िया जातीय देव हैं श्रीजगन्नाथ! राम, कृष्ण और बुद्ध एक साथ समाहित हैं श्री जगन्नाथ में। इसीलिए ओड़िया संत साहित्य पर जो मुख्यत: काव्य रूप में है; राम, कृष्ण और बुद्ध तीनों का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई देता है, श्रीजगन्नाथ के रूप में।

यदि मैं यह कहूँ कि संसार के सभी धर्म और मतवाद जगन्नाथरूपी विराट मिलन मंच पर मानववाद बनकर एकाकार हो गए हैं तो शायद गलत नहीं होगा। जगन्नाथजी के पास जाति, धर्म, वर्ण का कोई बन्धन नहीं है। यही कारण है कि ओड़िशा के संत साहित्य में जहाँ रामानुजाचार्य, जयदेव और चैतन्य का आध्यात्मिक प्रभाव दृष्टि में आता है, वहीं 'महिमा स्वामी' नामक रहस्यमय संत के सुधारवाद का भी सर्वाधिक प्रभाव है। ज्ञातव्य यह भी है कि भारत भर में अकेला ओड़िशा ही एकमात्र ऐसा प्रदेश है जहाँ आर्य संस्कृति के साथ प्राचीन आदिवासी संस्कृति महाप्रभु श्रीजगन्नाथ और संतों के प्रभाव से घुलमिल कर आज अभिन्न है। यह तब सामने आता है जब ओड़िया संत साहित्य में जुगदास और भीम भोई जैसे आदिवासी संत कवि भी अन्य आर्य संत कवियों के संग ससम्मान सुप्रतिष्ठित और अपनी श्रेष्ठतम रचनाओं के साथ जन-जन के हृदय में सदियों बाद भी बसे नजर आते हैं। ओड़िया संत साहित्य में यूँ तो नामों की कोई कमी नहीं है, परन्तु जिन प्रमुख संत कवियों के नाम सम्पूर्ण ओड़िया बिरादरी के हृदयस्थल पर महाप्रभु श्रीजगन्नाथ के बाद अमिट स्वर्णाक्षरों में सदियों से लिखे हैं, उनमें 'पंचसखा' के रूप में सुविख्यात बलराम दास, जगन्नाथ दास, अनंत दास, जशोवंत दास, अच्युतानंद के अलावा सारला दास, अरक्षित दास भी हैं। दास परम्परा के भक्त कवियों की सूची ओड़िशा में लम्बी है परन्तु आदिवासी संत कवि भीम भोई ओड़िया संत साहित्य में सुप्रतिष्ठित हैं।

1497 से 1533 ई० के दौरान जगन्नाथपुरी के गजपति राजा प्रतापरुद्र देव के शासनकाल में 'पंचसखा' ओड़िया साहित्य में आविर्भूत हो ओड़िशा के सामाजिक और धार्मिक जीवन को भक्तिरस में डुबो देने में पूरी तरह सफल रहे। 'पंचसखा' में सबसे ज्येष्ठ हैं भक्त बलराम दास। माना जाता है कि उनका जन्म 1473 ई० में हुआ था। वे एक प्रतिभाशाली और धार्मिक व्यक्ति थे। 1510 ई० में श्रीचैतन्य जब बंगाल से पुरी आए, तब तक बलरामदास अपने प्रमुख ग्रन्थों की रचना कर चुके थे। इनके भजनों की संख्या बहुत अधिक है। इनके द्वारा रचित 'जगमोहन रामायण' को ओड़िया भाषा की आदि रामायण होने का गौरव प्राप्त है। ओड़िया भाषा में 'गीता' के प्रथम अनुवादक भी बलराम दास ही हैं। उल्लेखनीय है कि 'जगमोहन रामायण' वाल्मीकि रामायण का अनुवाद नहीं है। इसमें जहाँ ओड़िया शब्द-वैभव भरा हुआ है, वहीं प्राचीन भूगोल, इतिहास और तत्कालीन सामाजिक चित्रण भी सर्वथा मौलिक है। महाप्रभु जगन्नाथ को सम्बोधित कर रचित 'भाव समुद्र' के सात सौ पचास छंदों में इस भक्त कवि के क्रोध, अपमान, विद्रोह और नैराश्य का अभूतपूर्व वर्णन मिलता है। ओड़िया साहित्य जगत में इनकी तुलना गोस्वामी तुलसीदास और बंगला रामायण के रचयिता संत कृतिवास दास से की जाती है। ओड़िया साहित्य में चर्चा यह भी मिलती है कि चैतन्य के सम्पर्क में आने के बाद भाव-प्रवणता के चलते मृत्युपूर्व वे उन्मादग्रस्त हो चुके थे और उन्हें 'मत्त बलराम' कहा जाने लगा था।

'पंचसखा' के द्वितीय और सर्वाधिक लोकप्रिय संत कवि हैं जगन्नाथ दास जिन्हें श्रीचैतन्य का समवयस्क माना जाता है। आप उत्कलीय जनजीवन के सर्वोच्च जनप्रिय कवि हैं। आपके द्वारा रचित 'भागवत' आज भी न केवल ओड़िशा बल्कि छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश सहित भारत के विभिन्न राज्यों और विदेशों में बसे ओड़िया परिवारों में सुपरिचित नाम है। नवाक्षरी छंद में रचित उक्त भागवत ओड़िया बिरादरी के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन की सदियों से अमूल्य प्राणप्रिय निधि है। ओड़ियाजन, ओड़िया भाषा और ओड़िया संस्कृति पर जगन्नाथ दास रचित 'भागवत' का प्रभाव अपरिमेय है।

इस ग्रन्थ की गम्भीरता और व्यापकता का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि स्वयं इसका पाठ कर मुक्ति पाने की गरज से निरक्षरजन आज भी साक्षर हो रहे हैं। जगन्नाथदास ने अपनी विधवा और निरक्षर जननी के लिए ही सरल और बोधगम्य ओड़िया में मूल संस्कृत भागवत का छायानुवाद किया था। इस ग्रन्थ की वाणी इतनी सहज और अमृतमय है कि इसकी तुलना किसी अन्य ओड़िया भागवत से नहीं की जा सकती। इस ग्रन्थ को ओड़िया साक्षरता का आदिग्रन्थ कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जगन्नाथदास पंचसखा युग के श्रेष्ठतम भक्त कवि हैं।

ओड़िया साहित्य समीक्षकों की दृष्टि में जगन्नाथदास भले ही सारला दास और बलराम दास की तरह साहित्यस्रष्टा न हों, परन्तु 'बाइबिल' की तरह वे ओड़ियाजनों के प्राणों में बसते हैं। कबीर के दोहों की तरह इनकी भागवत-पंक्तियाँ आमतौर पर सर्वाधिक उद्धृत आज भी हो रही हैं। निस्सन्देह जगन्नाथ दास ही ओड़िशा के पहले जनकवि हैं। 'पंचसखा' काल के शेष तीन में अनंतदास और जशोवंत दास अपनी रचनाओं से बहुत अधिक ख्याति अर्जन नहीं कर सके फिर भी जशोवंत दास का 'गीतगोविन्दचन्द्र' अवश्य उल्लेखनीय है। पंचसखा में कनिष्ठ अच्युतानंद सही अर्थों में एक समाज सुधारक संत थे। उच्चकुल के होकर भी वे ओड़िशा के कैवर्त और ग्वालों के सर्वाधिक पूज्य और देवतुल्य हैं। इनका सम्पूर्ण जीवन निरक्षर और उपेक्षित जनों के आध्यात्मिक विकास और समाज सुधार में व्यतीत हुआ। इनकी 'कैवर्त गीता' और 'हरिवंश' उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं। इनकी 'शून्य संहिता' में योगी, भोगी, संसारी सभी के लिए मार्गदर्शन है। निस्सन्देह इन पंचसखा संतों की वाणी और लेखनी में ईश्वर और आम आदमी के हितार्थ उन्हें शिक्षित, दीक्षित और समुन्नत करने हेतु ओड़िया साहित्य में सर्वप्रथम सद्प्रयास था।

ओड़िशा के संत साहित्य में एक अन्य भक्तकवि अरक्षित दास (1772 से 1803 ई०) की भी विशेष चर्चा है। इन्हें एक विशेष व्यक्तित्व के रूप में स्वीकारा जाता है। इनकी जीवनी महात्मा बुद्ध का स्मरण कराती है। अरक्षित दास ओड़िशा के गंजाम जिले की रियासत के राजकुमार थे। अट्ठारह वर्ष की उम्र में वैराग्य उत्पन्न होने पर, वे भोगविलास का परित्याग कर सत्य और आत्मोत्थान हेतु बरसों तक जंगलों-पहाड़ों में भ्रमण करते रहे। इस भ्रमणकाल में वे विभिन्न देवी-देवताओं की पीठ पर भी गए। परन्तु कहीं भी जब उन्हें 'देवत्व' का दर्शन नहीं हुआ तो वे मूर्तिपूजा को निरर्थक बताने लगे। जातपात के भेदभाव को अस्वीकार करते हुए वे उपदेश करते हैं—''मैंने हर जात के व्यक्ति से चाहे ब्राह्मण हो या चाण्डाल, भोजन ग्रहण किया है। हे ब्रह्म, तुम्हीं तो सबमें विराजते हो।'' आप यह भी उपदेश करते हैं कि ''सबको समान दृष्टि से देखना। किसी को अछूत मत मानना। पवित्र और अपवित्र सब एक हैं। इसी प्रकार स्त्री और पुरुष भी अभेद है।''

ओड़िशा के संत साहित्यकारों की सूची में कवि रत्नदास, गदाधर सामंत, दीनबन्धु मिश्र और 18वीं शताब्दी के एक सबर जाति के कवि जुगदास

भी उल्लेखनीय हैं। इस सूची में महाकवि भंज, गंगाधर मेहर, सारला दास और भक्त कवि मधुसूदन दास का नाम भी सम्मानपूर्वक लिया जा सकता है। लेकिन 18वीं सदी के 'कंध' नामक आदिवासी जाति में जनमे भीमा अथवा भीम भोई नामक एक अन्धे संत कवि को ओड़िशा के संत साहित्य में जो मुकाम हासिल है, वह निस्सन्देह अतुलनीय है।

संत कवि भीम भोई के गुरु महिमा स्वामी नामक एक रहस्यमय संत थे जो राजा राममोहन राय के समसामयिक थे, ऐसा माना जाता है। ओड़िशा के वनप्रान्तरों में घूम-घूम कर राजा राममोहन राय ने जिस प्रकार एकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा का विरोध और कुसंस्कारों से मुक्ति का प्रचार किया था, महिमा स्वामी ने भी ठीक वैसा ही किया था। उनके द्वारा प्रचारित तत्त्वदर्शन को ही 'अलेख' अथवा 'महिमाधर्म' कहा जाता है। 'महिमा गोंसाईं' के इस धर्म में आचार-आडम्बर, मूर्तिपूजा, जातपात और छुआछूत के लिए कोई स्थान नहीं है। इस धर्म के अनुगामी को सत्य, साधुता जैसे कतिपय नीति-नियमों का पालन करना पड़ता है। महिमा स्वामी ने आत्मशुद्धि और मुक्ति के लिए संन्यास के बदले गृहस्थ जीवन पर अधिक बल दिया है। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह बौद्ध धर्म का ही बदला हुआ रूप है। महिमा गोसाईं के इस तत्त्व प्रचार के सर्वाधिक श्रेष्ठ प्रवक्ता थे निरक्षर सूर संत कवि भीम भोई। इन्होंने अत्यन्त सरल, बोधगम्य भाषा में शताधिक भजनों और चौंतीसा की रचना की जो आज भी ओड़िशा भर में, विशेष कर ग्राम्यांचल में श्रद्धा-भक्ति से गाये जाते हैं। भीम भोई की कविताओं में चित्तशुद्धि, आत्मशुद्धि, कर्मशुद्धि, वाणीशुद्धि, आचार और विचार शुद्धि को मानवजीवन के लिए महत्त्वपूर्ण और अत्यावश्यक बताया गया है। महिमा धर्म में नारी-प्रवेश वर्जित था। परन्तु इसमें नारी-प्रवेश का श्रेय संत भीमा भोई को है। वे कहते हैं 'जैसे जल पवन का भेद नहीं, जहाँ जाए पुरुष, स्त्री जायेगी वहीं।'

भीम भोई द्वारा रचित भजन और चौंतीसा पुरातन ओड़िया काव्य शैली में होने के बावजूद भी इनमें क्लिष्टता, कठिन शब्द प्रयोग, अलंकार आदि नहीं हैं। अपनी बात समझाने के लिए इस संत कवि ने देशज छन्दों, जनभाषा और भक्तिरस का अद्‌भुत प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। इनकी रचनाओं में जो ज्ञान भरा हुआ मिलता है वह आश्चर्यचकित करता है। इन्हें पढ़ते समय कबीर, रैदास और संत कवि नारायण का स्मरण होता रहा। परन्तु यह अत्यन्त खेदजनक है कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी संतकवि भीम भोई का ओड़िया साहित्य में अब तक सही-सही मूल्यांकन नहीं किया गया है।

— सुशील दाहिमा 'अभय'
राउरकेला

सभी लिखित भाषाओं के लिए यूनिकोड का उपयोग

—विजयकुमार मल्होत्रा

ब्रिटिश साम्राज्य और अमेरिका के प्रभाव से भी अंग्रेजी का वर्चस्व विश्व भर मे उतना नहीं फैला था जितना कि इंटरनेट के माध्यम से रातों-रात फैल गया है। यूनेस्को के अनुसार आज इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं का लगभग 82 प्रतिशत भाग अंग्रेजी या रोमन आधारित भाषाओं में है। केवल 18 प्रतिशत भाग अन्य भाषाओं में है और भारतीय भाषाओं में तो इसका भाग एक प्रतिशत से भी कम है। आखिर ऐसी कौन-सी दिक्कतें हैं जिनके कारण इंटरनेट पर हिन्दी और भारतीय भाषाओं में पर्याप्त सूचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं? भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने 14 सितम्बर, 2006 को 'हिन्दी दिवस' पर आयोजित समारोह में कहा था, ''विश्व के अनेक भागों में हिन्दी भाषा आसानी से बोली जा सके, इसके लिए इंटरनेट पर हिन्दी साहित्य का यूनिकोड स्वरूप चाहिए।'' आखिर क्या है यह यूनिकोड? क्या यह अलाऊदीन का चिराग है, जिसके उपयोग से हिन्दी और भारतीय भाषाओं में सूचनाएँ अनायास ही इंटरनेट पर आ जाएँगी?

इस समय हिन्दी में इंटरनेट पर उपलब्ध वेबसाइटों और ब्लागों को हम **तीन श्रेणियों** में विभाजित कर सकते हैं। **सर्वप्रथम** वे वेबसाइट, जिन्हें खोलने के लिए किसी फांट विशेष को डाउनलोड करना पड़ता है, जिसका परिणाम यह होता है कि तकनीकी जानकारी न रखनेवाला आम उपयोगकर्ता उसका उपयोग नहीं कर पाता और फिर हर वेबसाइट के लिए अलग फांट डाउनलोड करना भी कम झंझट का काम नहीं है। इसके अलावा ऐसी वेबसाइट में उपलब्ध सूचनाओं को सर्च के माध्यम से खोजा भी नहीं जा सकता। भारत सरकार की अधिकांश वेबसाइट इसी श्रेणी की हैं।

दूसरी वेबसाइट वे हैं जिनके लिए डायनामिक फांट का उपयोग किया जाता है। डायनामिक फांट एचटीएमएल डिजाइन का एक नया रूप है, जिसकी सहायता से किसी भी फांट में निर्मित वेबसाइट की विषयवस्तु को उपयोगकर्ता फांट विशेष को डाउनलोड किए बिना ही देख और पढ़ सकता है। हिन्दी के अधिकांश समाचारपत्र इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं, लेकिन डायनामिक फांट में निर्मित वेबसाइट को न तो आप वर्ड आदि प्रलेख में सहेज सकते हैं और न ही इसमें संकलित विषय वस्तु को सर्च के माध्यम से खोजा जा सकता है। इससे यह स्पष्ट है कि इंटरनेट पर इन दोनों प्रकार की वेबसाइटों का कोई अस्तित्व ही नहीं है और इस प्रकार वेबसाइट बनाने का मूल उद्देश्य ही नष्ट हो जाता है। यह विडम्बना है कि आज भी कम्प्यूटर पर भारतीय भाषाओं के अधिकांश उपयोगकर्ता सिस्टम और फांट की असंगतता के कारण ई-मेल, चैट, टेंपलेट, आटो टेक्स्ट, स्पेल चेक जैसे कम्प्यूटर के सामान्य अनुप्रयोगों का भी उपयोग करने में हिचकिचाते हैं। यही कारण है कि कम्प्यूटर पर हिन्दी के उपयोगकर्ता आज भी शब्द संसाधन तक ही सीमित हैं। शब्द संसाधन के अन्तर्गत भी वे कम्प्यूटर पर हिन्दी में टाइप करने मात्र को ही हिन्दी कम्प्यूटिंग समझने लगते हैं।

बहुत ही कम उपयोगकर्ता ऐसे हैं जो हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में पावर पाइंट, एक्सेल और एक्सेस आदि का उपयोग करते हैं या इंटरनेट पर हिन्दी में खोज जैसी सुविधाओं का उपयोग करते हैं। इसका मुख्य कारण अब तक तो यही था कि भारतीय भाषाओं में विभिन्न सिस्टमों के आर-पार कोई समान मानक प्रचलित नहीं था। भारत सरकार द्वारा अनुमोदित भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटिंग के लिए आईएससीआईआई कोडिंग प्रणाली अच्छी शुरुआत थी, लेकिन वैश्वीकरण के इस युग में विविध प्रकार के प्लेटफार्म, फांट और सिस्टम के बावजूद आवश्यकता एक ऐसी मानक कोडिंग प्रणाली की थी जिसके अन्तर्गत विश्व की सभी भाषाएँ सह-अस्तित्व की भावना के साथ रह सकें। इन समस्याओं का एकमात्र समाधान है—यूनिकोड। हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार में यूनिकोड की सुविधा क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकती है।

तीसरी वेबसाइट वे हैं जिनमें आज सभी लिखित भाषाओं के लिए यूनिकोड नामक विश्वव्यापी कोड का उपयोग माइक्रोसाफ्ट, आईबीएम, लाइनेक्स, ओरेकल जैसी विश्व की लगभग सभी कम्प्यूटर कम्पनियों द्वारा किया जा रहा है। यह कोडिंग सिस्टम फांट- मुक्त, प्लेटफार्म मुक्त और ब्राउजर मुक्त है। विंडोज 2000 या उससे ऊपर के सभी पीसी यूनिकोड सपोर्ट करते हैं इसलिए यूनिकोड आधारित फांट का उपयोग करने से न केवल हिन्दी को आज विश्व की उन्नत भाषाओं के समकक्ष रखा जा सकता है, बल्कि उसकी सहायता से निर्मित वेबसाइट में खोज आदि अधुनातन सुविधाएँ भी सहजता से उपलब्ध हो सकती हैं। पिछले कुछ समय से भारत सरकार के कुछ विभाग, बड़े हिन्दी समाचार पत्र और हिन्दी पोर्टल यूनिकोड के महत्त्व को समझने लगे हैं और उन्होंने अपनी वेबसाइट के लिए यूनिकोड का प्रयोग शुरू कर दिया है। यह भी दिलचस्प तथ्य है कि इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाने का श्रेय कुछ उन छोटी पत्रिकाओं को है जिनके पास साधनों का हमेशा ही अभाव रहता है।

उच्च शिक्षा की समस्याएँ

— जगमोहन सिंह राजपूत

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के वर्षों में भारत ने अनेक नए शिक्षा संस्थानों, शोध संस्थानों तथा राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर की प्रयोगशालाओं की स्थापना की। तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व की दूरदर्शिता तथा वैज्ञानिकों के साथ सम्मानजनक संवाद के कारण इन संस्थाओं ने नाम कमाया। इनमें विकसित नई कार्य संस्कृति के परिणामस्वरूप भारत की वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र की क्षमताओं को सभी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा। परमाणु ऊर्जा तथा अन्तरिक्ष विज्ञान में भारत की श्रेष्ठता उन्हीं संस्थानों में किए गए कार्यों का परिणाम है। राजनीतिक तथा निर्णय के स्तर पर इसका अधिकांश श्रेय जवाहरलाल नेहरू को जाता है। आज इक्कीसवीं सदी में भारत की युवा पीढ़ी ने सूचना और संचार तकनीक के क्षेत्र में भारत को अत्यन्त सम्मानपूर्ण स्थान दिलाया है। सारा विश्व आज भारतीयों के 'ज्ञान समाज' के निर्माण में किए जा रहे योगदान को सराहता है। ऐसी कोई बड़ी अंतरराष्ट्रीय कम्पनी या कारपोरेशन नहीं जो भारतीय युवाओं को और अधिक संख्या में लेने को तत्पर न हो। आजादी के समय भारत का साक्षरता प्रतिशत 20 के आसपास था। आज यह 65-68 के करीब है। इस दौरान आबादी तीन गुने से अधिक बड़ी है। भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों में केवल 10 प्रतिशत 18-23 आयु वर्ग के युवा शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विश्व स्तर पर यह औसत 22 प्रतिशत है, जबकि विकसित देशों में यह इससे कहीं अधिक है। अपनी आर्थिक विकास दर बनाए रखने के लिए भारत को इस 10 प्रतिशत को बढ़ाकर 20-22 तक तो पहुँचाना ही होगा। यह कठिन, किन्तु आवश्यक लक्ष्य है। स्पष्टत: उच्च शिक्षा में बहुत बड़े प्रसार की त्वरित आवश्यकता है। इससे एक अन्य बिन्दु भी जुड़ता है। भारत में उच्च शिक्षा में स्थानों की कमी के कारण लगभग 80 हजार युवा प्रति वर्ष विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं। भारत में केवल आठ हजार विद्यार्थी बाहर से आते हैं, जिनमें अधिकांश भारतीय मूल के होते हैं। इस कम संख्या का एक कारण अधिकांश संस्थानों की गुणवत्ता में कमी होना भी है।

भारत को उच्च शिक्षा में न केवल स्थान बढ़ाने हैं, बल्कि उसकी गुणवत्ता भी बढ़ानी है। गुणवत्ता की स्थिति क्या है, इस पर भारत के प्रधानमंत्री के एक वक्तव्य को याद करना काफी होगा। मुम्बई विश्वविद्यालय के एक कार्यक्रम में मनमोहन सिंह ने कहा था कि भारत के दो तिहाई विश्वविद्यालय तथा नब्बे प्रतिशत महाविद्यालय गुणवत्ता के मानकों पर औसत से नीचे कार्य निष्पादन कर रहे हैं। नि:सन्देह विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में बड़े परिवर्तनों की आवश्यकता है ताकि वहाँ से तैयार होकर निकलने वाले युवा कौशल तथा ज्ञान के क्षेत्र में अपनी स्वीकार्यता सम्मान के साथ पा सकें। भारत सरकार, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, सामान्य जन तथा प्रबुद्ध प्राध्यापक—सभी मानते हैं कि उच्च शिक्षा में गुणवत्ता कौशलों की कमी एक बड़ी असफलता का बिन्दु रहा है। जाहिर तौर पर सबसे प्रमुख समस्या गुणवत्ता बनाए रखने तथा बड़े विस्तार के साथ उच्च शिक्षा में युवा वर्ग की भागीदारी को 22 प्रतिशत से आगे लाने की है। कार्य कितना ही कठिन क्यों न हो, इन तीनों के लिए सघन प्रयास करने होंगे। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने इसे 15 प्रतिशत तक लाने के लिए अनेक सुझाव दिए हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अनेक नई संस्थाओं की स्थापना की घोषणा कर सही दिशा में कदम उठाया है। तकनीकी तथा प्रबन्धन के संस्थानों—आईआईटी और आईआईएम की संख्या लगभग दो गुनी की जा रही है। 30 नए केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाए जा रहे हैं। सरकार के अलावा निजी स्तर पर अनेक निवेशक शिक्षा के क्षेत्र में आए हैं और इससे कहीं अधिक आने को उत्सुक हैं। यह सब सरकारी नियंत्रण से मुक्ति चाहते हैं। सरकार इसके लिए तैयार नहीं है, क्योंकि कहीं न कहीं कोई नियामक उपस्थित होना ही चाहिए। इसका स्वरूप क्या होगा, इस पर गहन विचार-विमर्श की आवश्यकता है।

पिछले कई वर्षों से शिक्षा, विशेषकर उच्च शिक्षा में गुणवत्ता पर हुई चर्चाओं में एक तथ्य सभी के सामने आया है। सर्वोच्च गुणवत्ता वाले संस्थानों तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में भी अध्यापकों की भारी कमी है। राज्यों के विश्वविद्यालयों की स्थिति और भी गई बीती है। डीम्ड विश्वविद्यालय तथा निजी प्रबन्धन के महाविद्यालय बहुत कुछ 'कागजों' पर ही करते हैं। वे नियामक संस्थाओं से प्रमाणपत्र प्राप्त करने में 'जुगाड़' लगा लेने की परम्परा का पालन करते हैं। उन्हें इस स्थिति के लिए आलोचना का पात्र बनना पड़ता है। अब 27 प्रतिशत आरक्षण लागू होना है। प्रवेश के लिए स्थान इसी अनुपात में बढ़ाने होंगे। इसके लिए शैक्षिक तथा अन्य संसाधनों की महती आवश्यकता होगी। केवल भारत सरकार से 'चेक' प्राप्त कर लेने से न तो अध्यापक मिल पाएँगे, न प्रयोगशालाएँ तैयार हो पाएँगी और न विद्यार्थियों को लाइब्रेरी या छात्रावास उपलब्ध हो पायेंगे। आरक्षण के निर्णय पर उच्चतम न्यायालय की स्वीकृति की मुहर भी लग गई है। अत: इसका निष्ठापूर्वक क्रियान्वयन होना ही चाहिए।

यदि संस्थाओं को एक-दो वर्ष का समय तैयारी के लिए मिल जाता तो गुणवत्ता के ह्रास से बचा जा सकता था। नौकरशाही शायद इन तथ्यों को 'मैटर्स आफ डिटेल्स' कहकर टाल सकती है, परन्तु आईआईटी तथा आईआईएम कई बार अपनी स्वायत्तता को पूरी तरह भुलाकर केवल आदेशों का अनुपालन करने में लग जाते हैं। यदि ऐसा न होता तो क्या राजस्थान के लिए स्वीकृत आईआईटी के लिए इस वर्ष के प्रवेश, प्रबंधन तथा पढ़ाई का उत्तरदायित्व आईआईटी कानपुर संभाल लेने को तैयार हो जाता? यही हाल उन नए आईआईटी का भी होगा जो भुवनेश्वर, अहमदाबाद, पटना, चंडीगढ़, हैदराबाद और गुवाहाटी में खुल रहे हैं। जो पुराने संस्थान अपनी वर्तमान व्यवस्था को अपूर्ण मान रहे थे और आरक्षण का बोझ उठा रहे थे वे इस व्यवस्था को स्वीकार कर गुणवत्ता बनाए रखने का कौन-सा उदाहरण देश के सामने रखेंगे? अब कौन-सी नियामक संस्था किसी निजी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय पर संसाधनों की कमी का अंकुश लगा सकेगी?

कैसे मिलेगी मंजिल?

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह व वित्तमंत्री पी० चिदंबरम आने वाले वर्षों में उच्च शिक्षा की तस्वीर बदल देने के जो भी सब्जबाग दिखा रहे हों, लेकिन जमीनी तौर पर चीजें उतनी ठोस दिखती नहीं हैं। दुनिया के दूसरे देशों के मुकाबले हमारे पास तो पीएचडी धारकों तक की बहुत बड़ी कमी है। वैज्ञानिक शोध के मामले में हम कहीं ठहरते ही नहीं। बावजूद इसके शोध की जरूरत के हिसाब से सरकार धन नहीं दे पा रही। संसद की एक समिति भी हैरान है कि आखिर सुधारों पर अमल होगा तो कैसे?

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से सम्बन्धित मानव संसाधन विकास मंत्रालय की प्राक्कलन समिति की बीते दिनों संसद में पेश रिपोर्ट काबिलेगौर है। जान सकते हैं कि आजादी के 60 साल बाद भी सालभर में हमारे यहाँ सिर्फ पाँच हजार लोग पीएचडी करके तैयार होते हैं। जबकि भारत से बाद में आजाद हुए पड़ोसी देश चीन में सालाना 35 हजार और अमेरिका में हर साल 25 हजार लोग पीएचडी करते हैं। इसी तरह 2005 में भारत के पास कुल 648 पेटेंट थे, जबकि चीन के पास 2452, अमेरिका के पास 45,111 और जापान के पास 25,145 पेटेंट थे। बात इतनी ही नहीं है। अकेले अमेरिका पूरे विश्व के 32 प्रतिशत शोधपत्र प्रकाशित करता है। इस मामले में भारत का हिस्सा सिर्फ 2.5 प्रतिशत है।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की रंजना श्रीवास्तव भारतखंडे संस्थान की कुलपति

प्रो० रंजना श्रीवास्तव को हिन्दुस्तानी संगीत के प्रसिद्ध शिक्षण केन्द्र लखनऊ स्थित जिस भातखंडे संगीत संस्थान का कुलपति प्रदेश के राज्यपाल टीवी राजेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया है, वहाँ की वह छात्रा भी रह चुकी हैं। किसी के लिए भी यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि वह जिस संस्थान में शिक्षा प्राप्त कर चुका हो वहीं का मुखिया बना दिया जाय। आप वर्तमान में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रदर्शन कला संकाय की डीन हैं। वह कथक की पारंगत कलाकार और दक्ष विशेषज्ञ हैं। उन्होंने कथक की उत्पत्ति व विकास विषय पर पीएचडी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ही पूरी की। लखनऊ घराने के विक्रम सिंघे की शिष्या रहीं प्रो० श्रीवास्तव को संगीत नाटक अकादमी से पुरस्कार भी मिल चुका हे। दो पुस्तकों सहित कथक व नृत्यकला पर ढेरों शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मंच कला संकाय के लिए यह अत्यन्त ही गौरव का विषय है कि यहाँ के दो-दो प्रोफेसरों को कुलपति होने का अवसर मिला है।

संकाय के **प्रो० चितरंजन ज्योतिषी** को राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, गवालियर का कुलपति नियुक्त किया गया है। प्रो० ज्योतिषी को वहाँ का प्रथम कुलपति होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा आरम्भ

म.गां.अ.हि.वि.वि., वर्धा में डॉ० भदंत आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन पीठ के अन्तर्गत बौद्ध अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया।

अध्ययन पीठ की स्थापना के सन्दर्भ में पिछले वर्ष श्रीलंका के केलानिया विश्वविद्यालय से महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय ने एक एमओयू पर हस्ताक्षर किया था।

विश्वविद्यालय में स्थापित डॉ० भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन पीठ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विधिवत मान्यता प्रदान की है। इस पीठ के अन्तर्गत बौद्ध दर्शन, साहित्य, कला एवं संस्कृति का अध्ययन-अध्यापन किया जाएगा। इस पीठ के माध्यम से छात्रों को भारत ही नहीं अपितु विश्व के विभिन्न देशों में व्याप्त बौद्ध दर्शन का परिचय भी कराया जाएगा।

मज़ाज़ पर डाक टिकट

डाक विभाग द्वारा उर्दू के इन्कलाबी शायर असरार उल हक उर्फ मज़ाज़ पर टिकट जारी किया गया। मज़ाज़ ऐसे शायर थे जिन्होंने लोगों में आजादी के लिए जोश और जुनून पैदा किया। डाक टिकट पर उनका बहुचर्चित शेर प्रकाशित किया गया है—

'बख्शी हैं हमको इश्क ने वो जुर्रतें मज़ाज़,
डरते नहीं सियासते अहले जहाँ से हम।'

ऑक्सफोर्ड ने कहा, भारतीय छात्र सर्वश्रेष्ठ

प्रतिष्ठित ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय भारत के छात्रों को दुनियाभर के छात्रों से श्रेष्ठ समझता है। विश्वविद्यालय चाहता है कि ज्यादा से ज्यादा भारतीय छात्र वहाँ पढ़ने के लिए आएँ। ऐसा कुछ कहते हैं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति क्रिस पैटन। भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया जैसी हस्तियाँ यहाँ अध्ययन कर चुकी हैं। फिलवक्त संस्थान में 257 भारतीय छात्र अध्ययन कर रहे हैं मगर यह संख्या चीनी छात्रों की संख्या की महज एक तिहाई है।

विज्ञान शिक्षकों की पढ़ाई को 500 करोड़

देश में वैज्ञानिक प्रतिभाओं की कमी को दूर करने के लिए केन्द्र सरकार ने हाल में छात्र-छात्राओं के विज्ञान पढ़ने के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएँ शुरू की हैं। असल समस्या यह है कि ज्यादातर छात्र विज्ञान को जटिल विषय मानकर लेते ही नहीं। इसलिए अब कोशिश यह हो रही है कि शिक्षकों को ऐसी ट्रेनिंग दी जाए कि वे सरल तरीके से विज्ञान पढ़ा सकें। इसके लिए विज्ञान के शिक्षकों को प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों से ट्रेनिंग प्राप्त करनी होगी।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा बनानी शुरू कर दी है। वैज्ञानिकों, चुने हुए शिक्षकों तथा शिक्षाविदों से विचार-विमर्श किया जा रहा है।

शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए केन्द्र सरकार ने 11वीं पंचवर्षीय योजना में 500 करोड़ रुपये स्वीकृत किए हैं। कार्य इसी साल से शुरू हो जायेगा।

अनपढ़ किसान बना संस्कृत विद्वान्

उम्र 50 साल है। वह कभी स्कूल नहीं गए, परन्तु दृढ़ इच्छाशक्ति व कड़ी मेहनत ने उन्हें संस्कृत का ज्ञाता बना दिया है। आज वह अपने गाँव में 25 से अधिक युवाओं एवं प्रौढ़ों को नि:शुल्क संस्कृत का ज्ञान बाँट रहे हैं। यह शख्स है, संस्कृत भारती से जुड़े जयप्रकाश आर्य। जय प्रकाश ने महज चार शिविरों में संस्कृत का अच्छा खासा ज्ञान अर्जित कर लिया है। बागपत के बावली गाँव के किसान जयप्रकाश आर्य ने कभी स्कूल की चौखट पार नहीं की।

पैगम्बर मुहम्मद की पत्नी पर किताब छापने से अमेरिकी प्रकाशक का इनकार

एक नामी अमेरिकी प्रकाशक ने विवाद के डर से एक किताब का प्रकाशन नहीं करने का फैसला किया है। यह किताब पैगम्बर मुहम्मद साहब की पत्नी आयशा पर आधारित बतायी जाती है। नामी प्रकाशन कम्पनी रैंडम हाउस का कहना है कि वह नहीं चाहती कि किताब बाजार में आये तो किसी तरह का विवाद खड़ा हो जाय और मुस्लिम समुदाय का गुस्सा भड़क जाय। किताब के लेखक शेरी जोन्स कम्पनी के फैसले से निराश हैं।

इस कम्पनी ने पिछले साल जोन्स का एक उपन्यास छापने के लिए उन्हें एक लाख डालर दिये थे। कम्पनी ने उनसे दो और किताबों के लिए अनुबंध किया, लेकिन अनुबंध अचानक खत्म भी कर दिया।

दिल्ली में बनेगी नेशनल पुलिस यूनिवर्सिटी

लॉ-एनफोर्समेंट एजेंसियों को रिसर्च मोर्चे पर सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राजधानी दिल्ली में एक नेशनल पुलिस यूनिवर्सिटी (एनपीयू) स्थापित करने की घोषणा की है। 2010 से शुरू होने वाली इस यूनिवर्सिटी में पुलिस अधिकारियों को बायोलॉजिकल वेलफेयर, फोरेंसिक साइंस और आतंकवाद सरीखे विषयों के सम्बन्ध में ट्रेनिंग प्रदान की जाएगी। इस यूनिवर्सिटी की स्थापना सीधे-सीधे नेशनल डिफेंस एकेडमी की तर्ज पर की जा रही है और यह केन्द्र सरकार के लिए देश की आन्तरिक सुरक्षा के मुद्दे पर थिंक टैंक के समान काम करेगी। इस यूनिवर्सिटी में पुलिस प्रशासन से सम्बन्ध रखने वाली क्वालिटी एजुकेशन, रिसर्च और अन्य एकेडमिक एक्टिविटी का आयोजन किया जाएगा और तो और यहाँ फिजिकल और सोशल साइंस की जानकारी भी युवाओं को प्रदान की जाएगी। यहाँ पुलिसिंग और सिक्योरिटी से जुड़े ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट ही नहीं, बल्कि डॉक्टरल व पोस्ट डॉक्टरल लेवल के कोर्स भी उपलब्ध कराए जाएँगे।

गिरीश कर्नाड वर्ल्ड थियेटर के राजदूत चुने गये

जाने-माने नाटककार तथा अभिनेता गिरीश कर्नाड को यूनेस्को के अन्तरराष्ट्रीय थियेटर इंस्टीट्यूट ने वर्ल्ड थियेटर के राजदूत के रूप में चुना है। पेरिस स्थित संगठन ने यह विशिष्ट सम्मान एक दर्जन कलाकारों को प्रदान किया। इसमें ब्रिटिश थियेटर और फिल्म निर्देशक पीटर ब्रूक, इटली के नाटककार डेरियो फो, फ्रांस के जाने-माने नाटककार एरियन माउचिनके तथा जर्मनी के नृत्य निर्देशक पिना बास्क शामिल हैं। कर्नाड को समकालीन भारत के अतिविशिष्ट नाटककारों में गिना जाता है। पिछले 40 वर्षों में

उनके नाटकों का अनुवाद और निर्माण कई भाषाओं में किया जा चुका है।

मध्य प्रदेश का पहला संस्कृत विश्वविद्यालय

मध्यप्रदेश को उसका पहला संस्कृत विश्वविद्यालय मिल गया है। राज्यपाल डॉ० बलराम जाखड़ और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हाल ही में विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया है। यह उज्जैन में आगरा रोड पर स्थित है। इसका नाम महर्षि पाणिनी संस्कृत विश्वविद्यालय रखा गया है।

रामनगर की रामलीला पर किताब

रामलीला के प्रचार-प्रसार में लगे अयोध्या शोध संस्थान ने रामनगर की रामलीला पर कॉफी टेबल बुक के प्रकाशन का निर्णय किया है जिसमें ढेर सारे दुर्लभ छायाचित्रों के साथ ही कई महत्त्वपूर्ण लेख भी शामिल किए जाएँगे। इसके लिए वाराणसी की सांस्कृतिक संस्था 'ज्ञान प्रवाह' से अनुबन्ध भी किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी भवन में संस्कृति विभाग के सचिव एवं संस्कृति निदेशालय के निदेशक राजन शुक्ल की अध्यक्षता में हुई बैठक में निर्णय किया गया कि खूबसूरत कागज पर इसका प्रकाशन कराया जाय और लेख अंग्रेजी में प्रकाशित किए जाए जिससे विदेश में रामलीली के प्रचार-प्रसार में सहायता मिले।

परिन्दों को तालीम नहीं दी जाती उड़ानों की..!
वो खुद ही बुलन्दियाँ छू लेते हैं आसमानों की...!!

कुछ ऐसे ही विद्वत मनीषी हैं आचार्य रामअधार पाठक जिन्होंने विद्वता की ऐसी बुलन्दियों को स्पर्श किया कि लोग श्रद्धा से नतमस्तक हो गये। इन दिनों अपने गाँव की पगडण्डियों पर विचरण करने वाले इस मनीषी ने अपनी कामयाबी को अपनी जन्मभूमि के नाम कर दिया। उन्होंने ऋग्वेद की लिपियों में सुधार कर एक कीर्तिमान तो जरूर स्थापित किया लेकिन कभी उसके लिए कोई सम्मान पाने की चेष्टा नहीं की। इस विद्वान् ने जापानी संविधान के अंग्रेजी संस्करण का हिन्दी में अनुवाद किया साथ ही बढ़ती लोकप्रियता के बीच अमेरिका के बुलावे को ठुकरा कर यह जता दिया कि उन्हें अपनी मिट्टी से कितना अटूट प्यार है। अपनी लेखनी के जरिए विदेशी विद्वानों को भी उन्होंने चुनौती दी। कई भाषाओं में पकड़ होने के नाते श्री पाठक ने ऋग्वेद जैसे ग्रन्थ पर 'लिंग्विस्टिक रिसर्च' किया है। इस समय वृद्ध हो चुके श्री पाठक अपने घर पर संस्कृत और अरबी भाषा के तुलनात्मक व्याकरण पर किताब लिख रहे हैं। समय बिताने के लिए ये ऋग्वेद व गीता का अध्ययन भी करते हैं। केराकत तहसील क्षेत्र के देवकली गाँव में चण्डी प्रसाद पाठक के यहाँ 1937 में जन्मे उनके पुत्र रामअधार पाठक की विद्वता का इतिहास काफी लम्बा व चुनौतीपूर्ण है।

विडम्बना ही है कि जनपद की माटी के इस विद्वान् को शासन-सत्ता ने कभी गम्भीरता से नहीं लिया।... अन्यथा जिन्हें तमाम राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजने पर स्वयं पुरस्कारों का कद्र बढ़ जाता वे 1997 में शोध सहायक पद से ही सेवानिवृत्त होकर अपने गाँव में परिवार के बीच सामान्य जीवन न बिता रहे होते।

योग पर पेटेंट की जंग

अमेरिका में योग को पेटेंट कराया जा रहा है। खबरें हैं कि बौद्धिक सम्पदा अधिकार के मामले देखने व पेटेंट जारी करनेवाले वहाँ के कापीराइट आफिस ने योगासनों, उनकी पद्धतियों और उससे जुड़े साधनों पर पेटेंट, सम्बन्धित इण्डस्ट्री को जारी कर दिए हैं, जिससे वहाँ की कम्पनियाँ सालाना तीन अरब डालर का व्यवसाय कर सकेंगी। यहाँ सवाल यह है कि जो अमेरिका इससे पहले बासमती चावल, नीम, हल्दी और जामुन आदि पर पेटेंट की जंग में भारतीय दावों के सामने नतमस्तक हो चुका है वहाँ एक बार फिर ऐसी कोशिशें क्यों की जा रही हैं? क्या अमेरिका को यह बताने की जरूरत है कि योग एक जीवन पद्धति के रूप में सदियों से भारतीय संस्कृति का अंग रहा है? इसलिए योग से जुड़े पेटेंट सम्बन्धी अमेरिकी दावे भारत की चुनौती के आगे कहाँ तक ठहर पाएँगे?

भारत सरकार ने योग का पेटेंट और इसका दुरुपयोग रोकने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना बनायी है। इसके तहत योग से सम्बद्ध प्राचीन संस्कृत श्लोकों का पाँच विदेशी भाषाओं में अनुवाद कर इसे पेटेंट कार्यालय को सौंपा जायेगा। इससे अमेरिका व अन्य देशों में योग का पेटेंट कराने की प्रक्रिया रोकी जा सकेगी। स्वास्थ्य मंत्रालय के आयुर्वेद, योग व नेचुरोपैथी, यूनानी सिद्ध व होमियोपैथी विभाग (आयुष) ने संस्कृत श्लोकों का अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन समेत भाषाओं में अनुवाद करने के लिए मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान तथा पुणे के केवल धाम से अनुबन्ध किया है। इन संस्कृत श्लोकों में योग के आसनों का वर्णन किया गया है। सूत्रों के मुताबिक अनुवाद के लिए परम्परागत ज्ञान स्रोत वर्गीकरण साफ्टवेयर का इस्तेमाल किया जा रहा है। हर श्लोक के साथ ही उस आसन का वीडियो भी तैयार किया जा रहा है। सरकार की योजना ऐसे 1500 आसनों और क्रियाओं का वीडियो बनाने की है, जो आमतौर पर प्रयोग में लाये जाते हैं। आयुष ने इसके अलावा आयुर्वेद, यूनानी व सिद्ध जैसी परम्परागत प्रणालियों की डिजिटल लाइब्रेरी बनाने का काम भी पूरा कर लिया है। इसमें एक लाख 20 हजार से भी ज्यादा चिकित्सकीय फार्मूलों का समावेश किया गया है। इन सभी को अमेरिका, यूरोप व जापान के पेटेंट कार्यालयों में सूचीबद्ध कराने की कार्रवाई की जा रही है। इसके बाद कोई भी योग, आयुर्वेद, यूनानी या सिद्ध का पेटेंट नहीं करा सकेगा, क्योंकि यह पेटेंट कार्यालय में परम्परागत ज्ञान के रूप में सूचीबद्ध होगी।

स्मृति-शेष

संगीत के मूर्धन्य विद्वान कविमंडन का निधन

वाराणसी। संगीत के मूर्धन्य विद्वान व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत एवं मंचकला संकाय के वरिष्ठ प्राध्यापक **डॉ० आर०वी० कविमंडन** का निधन रविवार,17 अगस्त को अपराह्न तीन बजे सर सुन्दरलाल अस्पताल में हो गया। वह 58 वर्ष के थे। सेनिया घराने की गायकी के लिए प्रसिद्ध डॉ० कविमंडन ने कर्नाटक संगीत सहित संगीत से जुड़ी कई पुस्तकें लिखी हैं। जिनमें प्रमुख हैं—सरगम, कर्नाटक संगीत पद्धति।

अमोघ नारायण नहीं रहे

पूर्णिया। प्रख्यात कवि, साहित्यकार और स्वतन्त्रता सेनानी **पण्डित अमोघ नारायण झा** का 12 जुलाई को हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। उनकी आयु 87 वर्ष थी।

पेशे से शिक्षक, अमोघ बाबू की दो काव्य कृतियाँ 'गीत गंध' और 'मैं तो तेरे पास में' कविता संग्रह प्रकाशित और आलोचकों द्वारा बहुत प्रशंसित रहे हैं। उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना द्वारा सम्मानित किया गया था।

दिल को दुखा गया
शायर अहमद फराज का जाना

उर्दू के बड़े शायर **अहमद फराज** का इंतकाल एक बहुत बड़ी क्षति है। यकीनन वे उर्दू के बड़े और हिन्दुस्तान के लोकप्रिय शायर थे। उनकी शायरी में कमिटमेंट और इंकलाब के साथ जिस तरह का रोमांस है वह किसी अन्य शायर में नहीं मिलता। फराज साहब हिन्दुस्तान के लिए ब्रांड एम्बेसडर से कम नहीं थे। हिन्दुस्तान के बारे में उनके ख्यालात सुनकर खुद हिन्दुस्तानियों की राय बदल जाती थी। उन्होंने इस देश के लिए कभी भी कोई निगेटिव बात नहीं की। शान्ति का एक बड़ा सन्देशवाहक अब इस दुनिया में नहीं रहा। उनकी लगभग सभी पुस्तकें देवनागरी लिपि में छप चुकी हैं। फराज पहले पेशावर में रहते थे। बाद में इस्लामाबाद में बस गए। वे जहाँ भी रहते थे, महफिल जम जाती थी। बड़े-बड़े पदों पर रहे। पाक बुक फाउण्डेशन के निदेशक भी रहे। उन्हीं के एक शेर से उनको श्रद्धांजलि—

रंजिश ही सही दिल को दुखाने के लिए आ।
आ फिर से मुझे छोड़ जाने के लिए आ।

सम्मान-पुरस्कार

प्रभाष जोशी को सर्वोच्च शलाका सम्मान

कमानी सभागार में हिन्दी अकादमी द्वारा सन् 2007-08 के सम्मान अर्पण समारोह का आयोजन किया गया। हिन्दी अकादमी की अध्यक्ष एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित तथा विगत वर्ष के शलाका सम्मान से सम्मानित कवि कुँवर नारायण ने हिन्दी अकादमी का सर्वोच्च सम्मान—शलाका सम्मान सुप्रसिद्ध पत्रकार **प्रभाष जोशी** को प्रदान किया।

साहित्यकार सम्मान, साहित्यिक कृति सम्मान तथा बाल एवं किशोर साहित्य सम्मान से उन्होंने डॉ० सत्यदेव चौधरी, रामकिशोर द्विवेदी, डॉ० सन्तोष गोयल, सुरेश तिवारी, शीला झुनझुनवाला, डॉ० जयदेव तनेजा, पाठक, प्रो० गोपाल राय, चंद्रकांता, नरेन्द्र नागदेव को साहित्यकार सम्मान से सम्मानित किया।

'काका हाथरसी सम्मान' वेदप्रकाश को तथा **'बाल एवं किशोर साहित्य सम्मान' शान्ति अग्रवाल, डॉ० शकुन्तला कालरा, मधुमालती जैन, प्रवेश सक्सेना, राजेन्द्र उपाध्याय, शंभूनाथ पाण्डेय** और **'साहित्यिक कृति सम्मान' भारतरत्न भार्गव, विमला लाल, रमेश उपाध्याय, अमित कुमार, मनोरमा जफा, डॉ० पुष्पा राही, डॉ० क्षमा शर्मा, अजय नावरिया, डॉ० जयपाल तरंग, सुनीता जैन** एवं **विकी आर्य** को दिया गया। इन सभी साहित्यकारों को नकद राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कुँवर नारायण तथा प्रभाष जोशी ने अपने सम्बोधनों में साहित्य और समाज की चर्चा की। समारोह की अध्यक्षता डॉ० मुकुन्द द्विवेदी ने की और संचालन एवं प्रशस्तिवाचन सचिव नानकचंद ने किया।

प्रो० अस्थाना समेत तीन को सरस्वती सम्मान

उत्तर प्रदेश सरकार ने **'सरस्वती सम्मान'** के लिए तीन पूर्व कुलपतियों **प्रो० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय, प्रो० बी०एन० अस्थाना** और **पद्मश्री प्रो० महेन्द्र सिंह सोढा** को चुना है। तीनों को एक-एक लाख रुपये की राशि देकर सम्मानित किया जाएगा तथा 50-50 हजार रुपये के शिक्षक-श्री पुरस्कार के लिए नौ शिक्षकों—गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो० रामनरेश चौधरी, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो० गोपालशरण व प्रो० यूएन द्विवेदी, काशी विद्यापीठ के प्रो० माताबदल शुक्ल, रामपुर महिला पीजी कॉलेज की डॉ० सुचेता गोइन्दी, उदयप्रताप कालेज, वाराणसी के कला शिक्षक प्रो० अमरनाथ शर्मा, पीजी कॉलेज अम्बेडकरनगर के प्रो० अब्दुल सत्तार, हंड़िया पीजी कॉलेज इलाहाबाद के प्रो० प्रेमचन्द्र तिवारी और एमपी कॉलेज गोरखपुर के प्रवक्ता डॉ० विजयकुमार चौधरी का चयन किया गया है। सभी को शिक्षक दिवस पर 5 सितम्बर को सम्मानित किया जाएगा।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए पुरस्कारों की यह नई परम्परा शुरू की गई है।

हिमांशु जोशी को 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान'

दिल्ली में आयोजित प्रेसवार्ता में पटना की साहित्यिक पत्रिका 'नई धारा' द्वारा वर्ष 2008 का द्वितीय **'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान'** प्रख्यात साहित्यकार **हिमांशु जोशी** को दिए जाने की घोषणा की गई। इसके साथ ही कवि एवं डॉ० **अमरनाथ 'अमर'** को वर्ष 2008 का **'नई धारा रचना सम्मान'** प्रदान किया जाएगा।

मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, 2008

मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, 2008 इस वर्ष **हरेराम नेमा समीप** को उनकी पुस्तकें 'जैसे' तथा 'साथ चलेगा कौन' के लिए और **राजेन्द्र नागदेव** को उनकी पुस्तक 'अंधी यात्राएँ' के लिए दिया जाएगा। यह सूचना चयन समिति के संयोजक अजय गुप्ता ने दी है।

डॉ० मैमूना बाल साहित्य पुरस्कार

बाल साहित्य के क्षेत्र में उत्तम कृति को दिए जाने वाले **'डॉ० मैमूना खातून शाह स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार-2008'** की घोषणा कर दी गई है। अखिल भारतीय स्तर पर दिया जाने वाला यह पुरस्कार इस वर्ष मुरादाबाद (उ०प्र०) के **शिव अवतार रस्तोगी 'सरस'** को उनकी काव्यकृति 'सरस संवेदिकाएँ' पर दिया जाएगा। पुरस्कार 14 सितम्बर 2008 को चंद्रपुर में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में प्रदान किया जाएगा।

विद्या सरस्वती पुरस्कार

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित प्रौद्योगिकी संस्थान में फार्मास्युटिक्स विभाग के **प्रो० बी मिश्रा** को **'राष्ट्रीय विद्या सरस्वती पुरस्कार'** एवं **'लाइफ टाइम अचीवमेंट गोल्ड मेडल अवार्ड'** से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट एवं इण्डियन सालिडार्टी कौंसिल द्वारा गत दिनों नई दिल्ली में आयोजित 'एजुकेशन ऐंड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट' विषयक संगोष्ठी के दौरान मिला।

हिन्दी उर्दू मजलिस का परिधि-सम्मान समारोह सम्पन्न

''जब तक हमारा व्यक्तित्व उन्नत और उदात्त नहीं होगा तब तक हमारे लिखे का समाज पर प्रभाव नहीं होगा। जब साहित्य हमारे जीवन के हाशिए में आ रहा है तब हिन्दी-उर्दू मजलिस का साहित्यिक अनुष्ठान में भाग लेना बढ़ते रेगिस्तान में शीतल हवा की तरह है।'' ये उद्‌गार हिन्दी उर्दू मजलिस द्वारा आयोजित परिधि-सम्मान समारोह के मुख्यातिथि डॉ० श्यामसुन्दर दुबे, अध्यक्ष मुक्तिबोध पीठ ने व्यक्त किए। दो सत्रों में आयोजित इस समारोह के प्रथम सत्र में साहित्यिक पत्रिका 'परिधि' के छठवें अंक का लोकार्पण तथा वरिष्ठ साहित्यकार **रमेश दत्त दूबे** एवं **डॉ० सुश्री शरद सिंह** को शाल, श्रीफल, स्मृति-चिह्न, सम्मान पत्र तथा सम्मान राशि प्रदान कर 'परिधि' सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ० एन०बी० शुक्ला को एक्सीलेंस अवार्ड

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित शारीरिक शिक्षा विभाग के **डॉ० एन०बी० शुक्ला** को दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ नेचुरोपैथी ने **'एक्सीलेंस-08 अवार्ड'** से सम्मानित किया है।

प्रो० शरद नारायण खरे को साहित्य निधि सम्मान

इतिहास के प्रोफेसर तथा **डॉ० शरदनारायण खरे** को उनकी उल्लेखनीय साहित्य सेवा पर शिव संकल्प साहित्य परिषद, होशंगाबाद ने 'साहित्य निधि सम्मान', सृजन सम्मान, रायपुर ने 'लघुकथा गौरव सम्मान', सुरभि साहित्य, संस्कृत अकादमी-खण्डवा ने 'दुष्यंत कुमार स्मृति सम्मान' तथा हिन्दी भाषा सम्मेलन पटियाला ने 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान' प्रदान कर सम्मानित किया।

प्रो० वेम्पटि कुटुंब शास्त्री का अभिनन्दन

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० वेम्पटि कुटुंब शास्त्री ने रविवार, 17 अगस्त को कहा कि संस्कृत सुरक्षित रहेगी, तभी भारतीय संस्कृति भी सुरक्षित रहेगी। संस्कृत को और समृद्धशाली बनाने की आवश्यकता है।

वाराणसी के तुलसीघाट पर आयोजित सम्मान समारोह में अपने अभिनन्दन से अभिभूत प्रो० शास्त्री ने उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि संस्कृत प्राचीन व सर्वप्रचलित भाषा है। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण इसे प्रमाणित भी करती है। समारोह में 11 वैदिकों द्वारा किए गए मंत्रोच्चार के बीच प्रो० वीरभद्र मिश्र ने दुशाला ओढ़ाकर कुलपति प्रो० शास्त्री का सम्मान किया।

भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार

2008 का **'भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार' निशांत** (बिजय कुमार साव) को उनकी कविता 'अट्ठाइस साल की उम्र में' के लिए प्रदान किया गया है। निर्णायक नामवर सिंह ने अपनी संस्तुति में लिखा है कि ''यह कवि विशेष रूप से मध्यमवर्गीय जीवन के अनछुए पहलुओं—यहाँ तक कि कामवृत्ति के गोपन ऐन्द्रिय अनुभावों को भी संयत ढंग से व्यक्त करने का साहस रखता है। काव्य भाषा पर भी कवि का अच्छा अधिकार है।''

संगोष्ठी/लोकार्पण

प्रभाष जोशी की पाँच पुस्तकों का लोकार्पण

वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी की पाँच पुस्तकों का लोकार्पण 30 जुलाई को दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में किया गया। लोकार्पण क्रमश: प्रभात खबर के प्रधान सम्पादक हरिवंश, हिन्दुस्तान टाइम्स भोपाल के सम्पादक एन०के० सिंह, दैनिक भाष्कर समूह के सम्पादक श्रवण कुमर गर्ग, अमर उजाला समूह के सम्पादक शशि शेखर और गाँधी मार्ग के सम्पादक अनुपम मिश्र ने किया। लोकार्पण कार्यक्रम में प्रभाष जोशी ने कहा कि हमें उसी भाषा में लिखना चाहिए जिससे हम प्रेम करते हैं। उसी भाषा में विचार आते हैं और आत्मीयता झलकती है। इसके साथ ही नई पीढ़ी के पत्रकारों को सीख दी कि भले ही पत्थर हो लेकिन कील ठोंकते जाएँ, एक दिन पार हो ही जाएगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० नामवर सिंह ने की और मंच संचालन सुधीश पचौरी ने किया।

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में हिरोशिमा दिवस का आयोजन

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी फ्युजी गुरुजी शान्ति अध्ययन केन्द्र तथा अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 6 अगस्त को हिरोशिमा दिवस का आयोजन किया गया।

6 अगस्त 1945 को जापान के हिरोशिमा शहर पर डाले गये बम की वजह से मारे गये लोगों के प्रति संवेदनाएँ प्रकट करने के लिए हिरोशिमा दिवस का आयोजन किया जाता है। विश्वविद्यालय के अकादमिक भवन में आयोजित कार्यक्रम में विषय प्रवेश करते हुए अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन विभाग के प्रभारी डॉ० नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने कहा कि अमेरिका ने 16 जुलाई 1945 को परमाणु का सफल परीक्षण किया था और 6 अगस्त को जापान के हिरोशिमा पर बम डाले जिसमें तीन लाख पचास हजार आबादी प्रभावित हुई तथा दो लाख लोग तद्क्षण कालकलवित हो गए। 9 अगस्त को नागासाकी शहर पर परमाणु बम डाले जिसमें दो लाख सत्तर हजार लोग प्रभावित हुए और एक लाख बीस हजार लोग मारे गये। उन्होंने कहा कि गांधीजी ने 1945 से 1948 तक 28 सन्दर्भों में परमाणु से सम्बन्धित बातों को रखा था। परमाणु बम विस्फोट पर अपनी प्रतिक्रिया में गांधीजी ने कहा था ''अब यदि विश्व अहिंसा को नहीं अपना लेता तो यह मानवता के लिए एक निश्चित आत्महत्या के समान होगा।''

इस अवसर पर डॉ० भदन्त आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन पीठ के कार्यकारी निदेशक तथा सुप्रसिद्ध विचारक डॉ० एम०एल० कासारे ने कहा कि जापान पर डाले गये बम का नाम 'वाई' था और वह 10 फीट का था जिसकी खोज प्रो० अल्बर्ट ने की थी। उन्होंने विश्व में अहिंसा एवं शान्ति प्रस्थापित करने के लिए बुद्ध के बताये पंचशील सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए कहा कि बुद्ध का पंचशील सिद्धान्त विश्व का शान्ति सन्देश है। भारत हमेशा से शान्ति का प्रवर्तक रहा और बुद्ध, महावीर और गाँधी ने शान्ति के सन्देश को विश्वभर में फैलाया।

दिनकर की पुस्तक भारतीय संस्कृति का घोषणा पत्र

हिन्दी साहित्य में रामधारी सिंह दिनकर की लोक-मान्यता दो कारणों से है—अच्छे राष्ट्रकवि के रूप में और भारतीय संस्कृति के व्याख्याता के रूप में। दिनकर इतिहास के विद्यार्थी रहे हैं, इसलिए भी उनके लिए यह सम्भव हुआ कि संस्कृति के चार अध्याय जैसा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ उन्होंने लिखा, जिस पर उन्हें 'साहित्य अकादेमी' का पुरस्कार 1956 ई० में मिला। साहित्य अकादेमी के सौजन्य से पूर्वांचलस्थित श्री रामानंद सरस्वती पुस्तकालय, जोकहरा (आजमगढ़) में दिनकर-जन्मशताब्दी के अवसर पर 21 और 22 जून को राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें विद्वानों ने दिनकर की कृतियों पर विचार-विमर्श किया। 21 जून को समारम्भ सत्र में, जो दिनकर और संस्कृति के चार अध्याय पर केन्द्रित था, बीज वक्तव्य देते हुए समीक्षक वीरेन्द्र यादव ने समाज के प्रति प्रतिबद्धता की ओर संकेत किया और कहा कि दिनकर अच्छे कवि हैं लेकिन उनकी चर्चित पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' जवारहलाल नेहरू की पुस्तक 'दि डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' से आगे नहीं जाती। साधना अग्रवाल ने वीरेन्द्र यादव के वक्तव्य से असहमत होते हुए कहा कि यदि दिनकर की पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' 'भारत एक खोज' से आगे नहीं होती तो भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू इसकी भूमिका नहीं लिखते। श्रीप्रकाश शुक्ल ने कहा कि दिनकरकी यह पुस्तक हमारी संस्कृति का खुला घोषणापत्र है जिसे चाहे आप माने या न मानें। इसकी वस्तुपरकता से इनकार नहीं कर सकते। रामाज्ञा राय ने, जो दिनकर के गाँव सिमरिया के रहने वाले हैं, दिनकर के जीवन के आरम्भिक संघर्षों को और नौकरी के दौरान ब्रिटिश शासन द्वारा लगाई गई पाबन्दियों को रेखांकित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति के इतिहास में अवगाहन करते जिस तरह पाँच हजार वर्ष की हमारी संस्कृति को उजागर किया है, वे धर्मपीठ नहीं हैं बल्कि हमारी संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं।

शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने बौद्ध धर्म के सन्दर्भ में दिनकर की स्थापना से सहमत होते हुए कहा कि वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया में बौद्ध धर्म एक बड़ा विस्फोट था जिसने हिन्दू धर्म को पुनर्विवेचन करने का अवसर दिया। इतिहासकार शम्सुल इस्लाम ने 1857 की लड़ाई में साम्प्रदायिक मतभेदों को भुलाकर एक साथ हिन्दू और मुसलमानों द्वारा लड़ी गई लड़ाई का उदाहरण देते हुए कहा कि संस्कृति जाति या सम्प्रदाय से ऊपर की चीज होती है, इसे हिन्दू या मुस्लिम संस्कृति के खाने में नहीं रखा जा सकता। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो० अवधेश प्रधान ने वीरेन्द्र यादव के बीज वक्तव्य का विरोध करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति के पहरेदार यहाँ के वामपंथी कभी नहीं हो सकते, जिनके हाथ में लाल झण्डा और मुँह में कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो है। वे भारतीय संस्कृति को प्रतिबद्धता से जोड़कर देखते हैं।

22 जून को संगोष्ठी का समापन विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो० विजेन्द्र नारायण सिंह ने कहा कि दिनकर की काव्यकृति 'उर्वशी' का प्रकाशन 1961 ई० में हुआ और हैदराबाद की मासिक पत्रिका 'कल्पना' में भगवतशरण उपाध्याय ने लम्बा समीक्षा लिखी थी। उस पर 'कल्पना' के तीन-चार अंकों में हिन्दी के कवियों और आलोचकों ने इस कृति के मूल्यांकन करने के प्रतिमान और मूल्यांकन के लिए काव्येतर मूल्य को कसौटी बनाने के विरोध में विचारोत्तेजक बहस की थी। भारत भारद्वाज ने कहा कि जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' जिसका प्रकाशन 1937 ई० में हुआ, के बाद दिनकर के काव्य नाटक 'उर्वशी' एक ऐसी कृति है जिसने कविता के इतिहास और विकास दोनों को प्रभावित किया है। 'कामायनी' के 24 वर्षों बाद 'उर्वशी' का प्रकाशन ऐतिहासिक उपलब्धि है।

'राजीव की स्मृतियाँ' का लोकार्पण

कांग्रेस जनरल सेक्रेटरी और एमपी राहुल गाँधी ने एक समय अपने पिताजी को राजनीति छोड़ने की सलाह दी थी। राहुल गाँधी ने 19 अगस्त को यह जानकारी पंचायतीराज मन्त्री मणिशंकर अय्यर द्वारा राजीव गाँधी पर लिखी अंग्रेजी पुस्तक के हिन्दी संस्करण 'राजीव की स्मृतियाँ' के लोकार्पण समारोह में 1989 के एक व्यस्त चुनाव अभियान के दौरान अपने पिताजी के साथ गुजारे समय का जिक्र करते हुए दी।

इस अवसर पर मणिशंकर अय्यर ने कहा कि उनकी यह पुस्तक 15 साल पहले लिखी गई थी जिसका हिन्दी अनुवाद आया है। यह पुस्तक

राजीव के साथ उनके पारिवारिक सम्बन्धों के विषय में नहीं बल्कि एक नौकरशाह के रूप में प्रधानमन्त्री के साथ जुड़े उनके संस्मरणों से सम्बन्धित है।

समारोह में वैश्विक सद्भाव और राजीव गाँधी तथा तकनीकी विकास और भारत का उन्नयन नामक दो किताबों का लोकार्पण किया गया। पहली पुस्तक का अनुवाद तथा एक अन्य का लेखन अमेठी के लेखक जगदीश सोनी ने किया है।

पूर्व न्यायाधीश चंद्रशेखर धर्माधिकारी की पुस्तकों का लोकार्पण

आज जो समस्याएँ हमारे सामने है वह गाँधीजी के सामने नहीं थीं। ऐसे में इन समस्याओं का समाधान गाँधी की किताब पढ़ कर नहीं किया जा सकता बल्कि उनके विचार और तौर तरीकों पर चिंतन कर नए रास्ते ढूँढ़ने होंगे। ये विचार है देश के जाने-माने पत्रकार प्रभाष जोशी के। वह 14 अगस्त को सर्वसेवा संघ, राजघाट में पूर्व न्यायाधीश चन्द्रशेखर धर्माधिकारी की पुस्तकों के लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि पद से सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारे और गाँधी के विचारों में अन्तर होगा तो समन्वय व समरसता प्रभावित होगी। ऐसे में सर्वोदय भी अर्थहीन हो जाएगा। मौजूदा परिवेश में जो समस्याएँ हैं उनके समाधान के लिए गाँधी के चिन्तन को नए परिवेश में सोचने की जरूरत है। इसके लिए सर्वोदयी लोगों को आगे आना होगा। हम सब किसी ऋषि के घराने के हैं। उनका गोत्र होता है लेकिन आज मुझसे कोई मेरा गोत्र पूछे तो मैं गाँधी गोत्र कहलाना बेहतर समझूँगा। उन्होंने कहा कि मुम्बई उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं गाँधी तत्त्व-विचार के चिंतक चन्द्रशेखर धर्माधिकारी की 'एक न्यायमूर्ति का हलफनामा' और 'लोकतंत्र, न्याय एवं राहों के अन्वेषी' पुस्तकें देश के अन्दर जाति, धर्म और प्रान्त की सीमारेखा तोड़ कर मूल्यनिष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं।

'भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही स्वर' पुस्तक का विमोचन

काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० अवध राम ने शनिवार, 9 अगस्त को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित 'भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही स्वर' पुस्तक के विमोचन के अवसर पर कहा कि दलितों की समस्या सिर्फ एक सूबे की नहीं बल्कि देश की है। इसका समाधान तभी होगा जब हर व्यक्ति अपना जातिसूचक नाम लिखना बन्द कर दे। उन्होंने कहा कि मीडिया जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल करना रोक दे तो आने वाले की कल तस्वीर बदल जायेगी।

कला संकाय के राधाकृष्णन सभागार में प्रो० विमल थोरात और सूरज बड़त्या द्वारा सम्पादित भारतीय दलित अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही स्वर' पुस्तक के साथ ही डॉ० महेश प्रसाद अहिरवार द्वारा सम्पादित 'जागृति' के 6वें अंक का विमोचन किया गया। विशिष्ट अतिथि डॉ० काशीनाथ सिंह ने कहा कि दलितों का विद्रोह, साहित्य की सभी विधाओं में है।

सुदर्शन वशिष्ठ द्वारा कहानी पाठ

साहित्य अकादेमी द्वारा 'कथा सन्धि' कार्यक्रम के तहत रवीन्द्र भवन नई दिल्ली में सुपरिचित कथाकार सुदर्शन वशिष्ठ का कहानी पाठ 8 अगस्त को सायं 6 बजे हुआ। इस अवसर पर सुदर्शन वशिष्ठ ने तीन कहानियों 'पहाड़ देखता है', 'मानस गन्ध' तथा 'हँसना मना है' का पाठ किया।

कहानियों पर टिप्पणी करते हुए प्रभाकर श्रोत्रिय ने कहा कि सरल और सहज भाषा में कहानी कहना वशिष्ठ की विशेषता है। बिना किसी आडम्बर और शब्दों के चमत्कार के प्रभाव बनाना इनकी कहानियों में पहले से ही खूबी रही है जो पढ़ी गई कहानियों में भी देखने को मिलती है। ऐसी कहानियों के लिए लेखक बधाई के पात्र हैं।

राजी सेठ ने कहा कि गहरी संवेदना के एक व्यंग्य का भाव वशिष्ठ की कहानियों में प्रबल रहता है। ये कहानियाँ हँसी के साथ आँसू दे जाती हैं।

कार्यक्रम से पहले साहित्य अकादेमी के उपसचिव बृजेन्द्र त्रिपाठी ने वशिष्ठ का परिचय दिया और आभार प्रकट किया।

निशंक का कहानी-संग्रह जर्मन में

उत्तराखण्ड के स्वास्थ्य मंत्री और साहित्यकार डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक के कहानी-संग्रह 'तुम और मैं' के जर्मन अनुवाद 'नूर एन वंस्क' का विमोचन हम्बर्ग में किया गया। इस अवसर पर हम्बर्ग विश्वविद्यालय ने डॉ० निशंक को सम्मानित किया।

14वाँ त्रिवेणी कजली महोत्सव

लोकगीत साहित्य की अनमोल विधा है जिसमें समाज का जीवन दर्शन अभिव्यक्त होता है। पूरे उत्तर भारत में लोकप्रिय मीरजापुरी कजली अपनी गायकी, स्वर माधुर्य एवं हृदय स्पर्शी भावों द्वारा सराही जाती है। अध्यात्म-संस्कृति-साहित्य को समर्पित संस्था 'त्रिवेणी' द्वारा 14वाँ कजली महोत्सव का भव्य आयोजन जी०डी० बिड़ला प्रेक्षागृह, मीरजापुर में किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कजली गायिका श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव व उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ के नवासे शहनाई नेवाज मुमताज हुसेन खाँ के बीच गायन-वादन की अभूतपूर्व जुगलबंदी हुई।

युवा गायक मन्नु मिश्रा, प्रतिष्ठित कलाकार कुसुम पाण्डेय व आदिवासी गायिका सरोज सरगम का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया और लगभग तीस कलाकारों ने अपनी कजली गायन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

महोत्सव के मुख्य अतिथि श्री चन्द्रदेव तिवारी, उप महानिरीक्षक (पुलिस) व संयोजक किशन बुधिया थे।

दसवाँ राज्य सम्मेलन

सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध नगर मंदसौर में म०प्र० प्रगतिशील लेखक संघ द्वारा दसवाँ राज्य सम्मेलन आयोजित कर 'नव साम्राज्यवाद के हमले और सांस्कृतिक प्रतिरोध' पर दो दिन तक लगातार विचार-विमर्श कर प्रदेश में सोचने-समझने वालों को जो सन्देश दिया गया है निश्चित ही उसकी गूँज दूर और देर तक सुनाई देगी।

सम्मेलन की औपचारिक शुरुआत लेखक व साम्प्रदायिक सौहार्द्र कायम करने के क्षेत्र में सक्रिय मुम्बई निवासी डॉ० राम पुनियानी ने की। आपने 'साम्राज्यवाद की नयी शक्ल और सांस्कृतिक चुनौतियाँ' विषय पर आधार वक्तव्य देते हुए कहा कि नव साम्राज्यवाद बाजार के माध्यम से मानव संस्कृति पर हमला कर रहा है।

वरिष्ठ कवि चन्द्रकांत देवताले ने कहा कि लेखक आत्ममुग्ध न रहे। वे सांस्कृतिक उत्थान की अपनी जिम्मेदारी को समझें। प्रजातंत्र के सभी स्तम्भों को ध्वस्त किया जा रहा है। आज का समाज विचार शून्य बन रहा है। किताबों को पढ़ने वाले सिरे से गायब है, आम आदमी से जुड़कर ही संस्कार की पहचान कायम हो सकेगी।

दूसरे सत्र में विख्यात समाजसेवी विचारक डॉ० असगर अली इंजीनियर ने नवसाम्राज्यवादी खतरों को रेखांकित करते हुए ऐतिहासिक घटनाओं का तथ्यात्मक उल्लेख किया। उन्होंने लेखकों से शोषितों की पीड़ा को शिद्दत से उठाने का आग्रह किया।

रात्रि में जन सत्र का उद्घाटन विख्यात रंगकर्मी हबीब तनवीर ने किया। उन्होंने कहा कि जिस देश के गाँवों में भूख पसरी हो किसान आत्महत्या करने पर विवश हों, बेरोजगारी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हो, वहाँ सस्ती कार को उपलब्धि बताना शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि नव साम्राज्यवाद का बाजारी स्वरूप हमारी चेतना व चरित्र को प्रदूषित कर रहा है, हमारी पारम्परिक लोक संस्कृति और सभ्यताओं को लील रहा है। कार्यक्रम में स्थानीय इकाई द्वारा प्रकाशित 'स्मारिका' के अलावा काव्य संकलन 'ताकि जागें लोग' (स० चन्द्रकांत द्विवेदी) 'हरसूद एक शहर की मौत' (धर्मराज जैन) काव्य संकलन, 'जुगल बंदी' (निरंजन श्रोत्रिय), उपन्यास 'तिलचट्टे' (डॉ० पुन्नी सिंह) कहानी संग्रह 'गोलियों की भाषा' (डॉ० पुन्नी सिंह) कविता पोस्टर (रविन्द्र व्यास) एवं 'अफीम राजनीतिक और

साम्प्रदायिकता' (हरनामसिंह) की पुस्तकों एवं 'आकंठ' पत्रिका का विमोचन हुआ।

दूसरे दिन हिन्दी साहित्य की अपने समय से मुठभेड़ विषय पर चर्चा हुई। विषय का प्रतिपादन करते हुए विख्यात कवि नरेश सक्सेना ने कहा कि यह घृणा का युग है। देश का अतीत महान पराजयों का इतिहास रहा है। देश में वर्ण व्यवस्था के कारण हम सदैव हारे हैं। जीत के लिये तौर तरीके बदलने होंगे। अच्छी कविता वही है जो संस्कृति में छा जाए, कविताओं की सच्ची समीक्षा नहीं हो रही है। अच्छी किताबें खरीदने और पढ़ने की आदत समाप्त हो गई है। हिन्दी साहित्य अब केवल प्रकाशकों की दूकानों पर बिकता है। राष्ट्रीय सचिव डॉ० कमलाप्रसाद ने कहा कि रचनाकार कालजयी होते हैं। लेखक देश में जारी घटनाक्रम से अछूता नहीं रह सकता, उन्हें अपने समय में हस्तक्षेप करना होगा।

हाथी दाँत का चश्मा

साहित्य अकादेमी सभागार में राजेश जैन के कहानी-संग्रह 'हाथी दाँत का चश्मा' के लोकार्पण की अध्यक्षता करते हुए कथाकार राजेन्द्र यादव ने कहा कि वह राजेश जैन की कहानियाँ पढ़कर चकित हैं। ये कहानियाँ नई भाषा, नए वैज्ञानिक क्षेत्र एवं सम्भावनाओं की कहानियाँ हैं। कथा-लेखिका चित्रा मुदगल ने कहा राजेश जैन की कहानियाँ हमें अलग लोक में ले जाती हैं। इन कहानियों पर प्रेमपाल शर्मा, वीरेन गोहिल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

रमणिका गुप्ता की तीन पुस्तकें

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी सभागार में आयोजित समारोह में आदिवासी जनजीवन पर केन्द्रित रमणिका गुप्ता की तीन पुस्तकों— 'आदिवासी : विकास से विस्थापन', 'आदिवासी साहित्य यात्रा' और 'आदिवासी कौन' नामक पुस्तकों का लोकार्पण राजेन्द्र यादव, मैनेजर पाण्डेय और लीलाधर मंडलोई ने किया।

नामी चेहरों से यादगार मुलाकातें

राष्ट्रपति भवन में प्रख्यात पत्रकार आलोक मेहता की पुस्तक 'नामी चेहरों से यादगार मुलाकातें' की पहली प्रति प्रतिभा पाटिल को भेंट की गई। इस पुस्तक में उनके द्वारा इन्दिरा गाँधी, राजीव गाँधी, अटल बिहारी वाजपेयी, शंकर दयाल शर्मा, आर वेंकटरमण और वर्तमान राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल समेत सभी क्षेत्रों की जानी-मानी हस्तियों से लिए गए साक्षात्कार सम्मिलित हैं। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने आलोक मेहता को बधाई देते हुए उनके प्रयास की सराहना की।

कन्हैयालाल नंदन : रचना संचयन

नई दिल्ली। इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर के फाउंटेन लॉन में शीर्षस्थ पत्रकार एवं साहित्यकार डॉ० कन्हैयालाल नंदन के परिजन एवं मित्रों ने उनके 75 वर्ष पूरे करने के अवसर पर एक समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर 'कन्हैयालाल नंदन : रचना संचयन' शीर्षक पुस्तक का विमोचन प्रख्यात फिल्मकार एवं गीतकार गुलजार तथा डॉ० कर्णसिंह ने किया। इस पुस्तक में डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल द्वारा सम्पादित नंदनजी की चुनी हुई रचनाएँ संकलित हैं।

सिंदूरी साँझ और खामोश आदमी

शिमला। स्थानीय बचत भवन में हिमाचल कला, संस्कृति भाषा अकादमी द्वारा आयोजित समारोह में प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी पहाड़ी गाँधी बाबा कांशीराम जयन्ती के अवसर पर अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पहाड़ी भाषा का व्याकरण' के साथ सुदर्शन वशिष्ठ की दो पुस्तकों 'हिमाचल के दर्शनीय स्थल' तथा 'सिन्दूरी साँझ और खामोश आदमी' का विमोचन हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रो० प्रेमकुमार धूमिल ने किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि मनाली में अटलबिहारी वाजपेयी की अध्यक्षता में हुए कवि सम्मेलन में जब वशिष्ठ ने अपनी कविताएँ सुनाई थीं तो अटलजी ने कहा था कि ऐसी कविताएँ अपनी माटी से जुड़ा व्यक्ति ही कर सकता है।

संस्कृत में 'भीमशतकम्'

दिल्ली सचिवालय में मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने अपने कार्यालय कक्ष में डॉ० बी०आर० अम्बेडकर के व्यक्तित्व पर प्रकाशित संस्कृत काव्य 'भीम शतकम्' का लोकार्पण किया। इस मौके पर उपाध्यक्ष कुलानंद भारतीय और सचिव डॉ० श्रीकृष्ण सेमवाल उपस्थित थे। पुस्तक में अम्बेडकर पर 100 श्लोकों में उनके सम्पूर्ण जीवन के पहलुओं को समाहित किया गया है।

कुछ पानी कुछ आग

नई दिल्ली। हिन्दी भवन में हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित समारोह में नरेश शांडिल्य की पुस्तक 'कुछ पानी कुछ आग' का मुख्य अतिथि डॉ० रामशरण गौड़ की उपस्थिति में विमोचन किया गया।

कहानी-संग्रह 'मझधार'

पटना। सिन्हा लाइब्रेरी के सभागार में चन्द्रधुन्ता स्मृति न्यास द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में चर्चित कथाकार सुखदेव नारायण की 'मझधार' शीर्षक कहानी-संग्रह का विमोचन पटना दूरदर्शन के निदेशक डॉ० शशांक द्वारा किया गया। सभा की अध्यक्षता नृपेन्द्रनाथ गुप्त ने की।

जनजातीय भाषाओं के लिए नागरी लिपि उपयुक्त

भारत सरकार की उत्तर-पूर्वी परिषद के सौजन्य से पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी ने डॉन बॉस्को यूथ सेण्टर के सेमिनार कक्ष में दो दिवसीय भारतीय लिपि सम्मेलन का आयोजन किया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय हिन्दी संस्थान शिलांग केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो० विद्या शंकर शुक्ल ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए बताया कि देश की एकता और अखण्डता के लिए एक लिपि का होना आवश्यक है। संगोष्ठी की अध्यक्षता पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० सुशील कुमार शर्मा ने की तथा संचालन अकेलाभाई ने किया।

कहानी विधा पर कार्यशाला

इन्दौर में मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति के सभागार में इन्दौर लेखिका संघ द्वारा दो सत्र वाली कहानी विधा पर कार्यशाला आयोजित की। प्रमुख साहित्यकार सूर्यकान्त नागर तथा विलास गुप्ते ने भाग लिया। कार्यशाला का संयोजन मंगला रामचंद्रन ने किया।

नवगीत संग्रह 'धरती तपती है' का विमोचन

विगत दिनों बरही नगर की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था युवा मंच 'होली टाइम्स' एवं युवा संस्कृतिकर्मियों, समाजसेवियों तथा प्रबुद्ध नगरवासियों द्वारा 'छोटी महानदी ग्राम्यांचल' के युवा कवि एवं नगर में वर्षों पूर्व अध्यापक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त श्री आनन्द तिवारी के सद्य: प्रकाशित प्रथम नवगीत संग्रह 'धरती तपती है' का विमोचन, भोपाल से पधारे प्रमुख समीक्षक डॉ० विजयबहादुर सिंह, वरिष्ठ नवगीतकार द्वय अनूप अशेष (सतना) एवं राम सेंगर (कटनी) के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ नाटककार, कवि, व्यंग्यकार श्री रामकिशोर मेहता एवं प्रतिष्ठित कथाकार कवि देवेन्द्रकुमार पाठक महरुम ने 'होली-टाइम्स' का लोकार्पण किया।

श्री गिरिराजकिशोरजी का व्याख्यान

गुजरात विद्यापीठ के महादेव देसाई समाज सेवा महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में 26 जुलाई 2008 को राष्ट्र के जाने-माने उपन्यासकार श्री गिरिराज किशोरजी का व्याख्यान आयोजित किया गया। हिन्दी विभाग की अध्यक्ष एवं महादेव देसाई महाविद्यालय की आचार्य प्रो० मालती दुबे ने गिरिराज किशोरजी का स्वागत विद्यापीठ की परम्परा के अनुसार खादी के वस्त्र एवं सूत की माला से किया।

श्री गिरिराज किशोरजी ने अपने व्याख्यान में 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के कई अंश विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किए और कहा कि इस उपन्यास में वर्तमान, अतीत और कल्पना तीनों के समन्वित रूप का दर्शन पाठकों को करवाने का मैंने प्रयास किया है।

आशुभाषण प्रतियोगिता

7 जुलाई को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के तत्वावधान में हिन्दी 'आशुभाषण प्रतियोगिता' का आयोजन सेण्ट्रल बैंक आफ इण्डिया के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में

गुजरात विद्यापीठ के हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो० मालती दुबे एवं राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल की शिक्षिका कु० ममता यादव उपस्थित थीं। प्रतियोगिता के तहत विभिन्न बैंकों से आये लगभग 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रो० मालती दुबे ने कहा—''बैंकों में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन सराहनीय एवं प्रेरणादायक है।''

राष्ट्रकवि की जयंती मनाई

चेन्नई। साहित्यानुशीलन समिति, चेन्नई के तत्वावधान में रविवार, 3 अगस्त 2008 को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 122वीं जन्म-जयंती श्रद्धा एवं उल्लासपूर्वक मनाई गई। राजेन्द्र बाबू सभागार में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दी और तमिल के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ० एन० सुंदरम ने की। राष्ट्रकवि गुप्तजी के चिरस्मरणीय साहित्यिक अवदान का उल्लेख करते हुए समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने कहा कि युवावस्था में ही 'भारत-भारती' जैसी प्रेरणाप्रद काव्यकृति की रचना करके वे यशस्वी हो गये। उनकी पंक्तियाँ आज भी प्रबुद्ध समाज में दुहराई जाती हैं—'हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएँ सभी।

डॉ० उषा तिवारी के शोध ग्रन्थ का विमोचन व सम्मान समारोह

बिलासपुर। विकास संस्कृति साहित्य परिषद के तत्वावधान में शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की हिन्दी सहायक प्राध्यापिका डॉ० उषा तिवारी के शोध ग्रन्थ 'साठोत्तर काव्य में पारिवारिक जीवन' का विमोचन समारोह बिलासपुर के संभागायुक्त माननीय श्री शिवकुमार तिवारी के मुख्य आतिथ्य, प्रख्यात समीक्षक एवं भाषाविद् डॉ० विनयकुमार पाठक हिन्दी विभागाध्यक्ष शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय की अध्यक्षता तथा डॉ० इन्द्रबहादुर सिंह जनवादी कवि एवं समीक्षक मुम्बई, डॉ० डी०पी० अग्रवाल वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ० सोमनाथ यादव सदस्य राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के विशेष आतिथ्य में सोत्साह सम्पन्न हुआ।

साहित्यिक पत्रकारिता दिवस समारोह सम्पन्न

आई०सी०सी०आर० आजाद भवन सभागार में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सहयोग से यु एस एम पत्रिका रजत जयंती वर्ष एवं छठा साहित्यिक पत्रकारिता दिवस समारोह पद्मश्री शाम सिंह 'शशि' एवं भारत में मारीशस के उच्चायुक्त महामहिम श्री मुक्तेश्वर चुन्नी के अतिविशिष्ट आतिथ्य में आज की साहित्यिक पत्रकारिता पर रवि शर्मा एवं अन्य साहित्यकारों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। 'यू एस एम पत्रिका का रजत जयन्ती विशेषांक' एवं सतेन्द्र कुमार सिंह 'सलब' कृत 'सूरज की परछाई' कहानी-संग्रह निशिगंधा कृत 'अष्टपदि' डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय कृत 'समालाप' माधुरी मिश्रा कृत, 'मुस्कान निकेतन' एवं लोकार्पित किया गया। इसमें भारतवर्ष से 250 लब्धप्रतिष्ठ विद्वान साहित्यकारों ने भाग लिया।

'तुम ऐसे तो न थे' उपन्यास का लोकार्पण समारोह

डॉ० सरला अग्रवाल के सद्य प्रकाशित उपन्यास 'तुम ऐसे तो न थे' का लोकार्पण वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० नरेश दाधीच के कर-कमलों द्वारा आश्रय भवन, कोटा में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० दयाकृष्ण विजय एवं डॉ० प्रेमचंद्रजी विजयवर्गीय कर रहे थे।

'सांस्कृतिक सौन्दर्य' पर आयोजित होगी सीरियल संगोष्ठी

वाराणसी। संस्कृति पर जब हमले होते हैं तो साहित्यकार, कलाकार एवं पत्रकार अपनी कला तथा लेखनी के माध्यम से ही अपने समय के पोत के लिए सारंग का काम करता है। आतंकवाद के हरकारे बामियान बुद्ध को तोड़े या साम्राज्यवादी महाशक्ति बमबारियों से बगदाद को ध्वस्त करे। हर हालत में आहत होती है संस्कृति। स्वाधीनता के साठ वर्षों में हमारी संस्कृति भी कम आहत नहीं हुई है। संवेदनाएँ शून्य हो गईं, परिवार बाजार बन गया, व्यक्ति महज उपभोक्त हो गये, नई 'पेज थ्री' संस्कृति बढ़ गई, सामाजिक परिदृश्य में श्लील और अश्लील की सीमाएँ तोड़ दी गई, सौन्दर्य बोध देह बोध बन गया और कैश होने के लिए संस्कृति 'कैटवाक' करने को विवश हो गयी। ऐसे में सौन्दर्य शास्त्र पर मौलिक स्थापनाओं तथा वैचारिक क्रान्ति के लिए 'सांस्कृतिक सौन्दर्य' विषयक सीरियल संगोष्ठी का आयोजन आवश्यक हो गया है ताकि राष्ट्रहित में संस्कृति को बचाया जा सके। एक ही विषय पर यह संगोष्ठी त्रैमासिक होगी और प्रत्येक गोष्ठी में कोई न कोई प्रख्यात विद्वान और राष्ट्रीय स्तर के सशक्त हस्ताक्षर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहेंगे। यह प्रयास होगा कि यह सीरियल संगोष्ठी राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संस्कृति की सुरक्षा में वैचारिक प्रणेता बने।

ऋचा संगोष्ठी

डालमिया हाउस, नई दिल्ली में सुश्री लक्ष्मण डालमिया की अध्यक्षता में वरिष्ठ कथाकार चन्द्रकांताजी की दो पुस्तकों 'तैंतीबाई' तथा 'मेरे भोज पत्र' पर विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई। इसमें डॉ० अमरनाथ अमर, डॉ० पवन माथुर, डॉ० संतोष गोयल ने 'तैंतीबाई' कहानी-संग्रह की समीक्षा की। इस अवसर पर ऋचा संस्थान की ओर से 'नारी एक सफर' पुस्तक का विमोचन प्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्गल ने किया।

गोष्ठी की मुख्य अतिथि प्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्गल ने चंद्रकांताजी की कहानियों पर अपने विचार रखते हुए कहा कि चंद्रकांता ने जहाँ आतंकग्रस्त कश्मीर के आमजन की समस्याओं और दु:खों को वाणी दी है, वहीं स्त्री अस्मिता से जुड़े प्रश्नों और संघर्षों का भी परीक्षण किया है। उन्होंने कहा लेखिका का अनुभव जगत सम्पन्न है और समाज और समय के प्रति प्रतिबद्धता उनके लेखन में दृष्टव्य है।

'हिन्दी भाषा और बघेली साहित्य' विषय पर प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी

रीवा के मानस भवन में 26 जुलाई 2008 को मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन रीवा इकाई एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में 'हिन्दी भाषा और बघेली साहित्य' विषय पर प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। संगोष्ठी शुभारम्भ प्रसिद्ध पत्रकार प्रो० रामशरण जोशी, उपाध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का परिचयात्मक उद्बोधन मध्यप्रदेश साहित्य सम्मेलन रीवा इकाई के अध्यक्ष डॉ० चंद्रिका प्रसाद 'चन्द्र' ने किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो० रामशरण जोशी ने बोलियों की अस्मिता पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी भाषा को सक्षम बनाने के लिए सभी बोलियों को महत्त्व देना पड़ेगा। हिन्दी भाषा की सभी बोलियों में अंतरंग सम्बन्ध होना चाहिए। उन्होंने बोली-भाषा के द्वन्द्व को जीवन्त करने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि यह बाजारवाद का युग है। आज की युवा पीढ़ी वर्चस्व के लिए संघर्ष कर रही है। ऐसे में बोलियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है। उन्होंने कहा जब हम हिन्दी बोलते हैं तब उसमें बघेली, बुन्देली, भोजपुरी, अवधी ब्रज इत्यादि सभी बोलियों का मिश्रण हो जाता है। मौखिक परम्परा सदा से लिखित परम्परा को चुनौती देती आ रही है। प्रो० यादव ने कहा कि कविता की जमीन लोक है। लोगों में, गाँवों में, सड़क छाप लोगों के बीच कविता का जन्म होता है। कविता बोलियों को बोलने वालों के बीच जन्म लेकर पढ़े-लिखे के पास चली जाती है। कविता हमेशा मातृभूमि की ओर जाती है। लोकगीत तो सांस्कृतिक धरोहर हैं।

वसुधा के सम्पादक कवि राजेन्द्र शर्मा ने कहा आज सभी टी०वी० सीरियलों से भारत का गाँव कट चुका है और जब गाँव समाप्त हो गया तब बोलियों के विकास की सम्भावना कैसे की जा सकती है? हिन्दी को यदि अपना विकास करना है तो बोलियों के पास बैठना पड़ेगा। बोलियों से सम्पर्क बनाना पड़ेगा। प्रसिद्ध समकालीन कवि बद्रीनारायण ने लोकभाषा के

महत्त्व को उद्घाटित करते हुए कहा कि लोकभाषा में ही हमारी सभ्यता के विकास का इतिहास निहित है। युवा रचनाकार डॉ० बहादुर सिंह परमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि लोकभाषा के माध्यम से ही हिन्दी का विकास सम्भव होगा। कवि या रचनाकार तो शासक व प्रजा के बीच सेतु का कार्य करता है। समग्र कार्यक्रम संचालन एवं संयोजन अवधेशप्रताप सिंह वि०वि०, रीवा, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष कवि डॉ० दिनेश कुशवाहा ने किया।

उद्घाटन सत्र के बाद विमर्श सत्र शुरू हुआ। यह सत्र 'हिन्दी भाषा और बघेली साहित्य' पर केन्द्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० चौथीराम यादव ने की। विमर्श सत्र तीन उपखण्डों में बँटा था। पहला—हिन्दी भाषा और बघेली कविता, दूसरा—हिन्दी भाषा और बघेली कहानी एवं निबन्ध, तीसरा एवं अन्तिम उपखण्ड हिन्दी भाषा और बघेली नाटक एवं संस्मरण। प्रथम उपखण्ड के प्रमुख वक्ता डॉ० लहरी सिंह एवं शशिभूषण थे। तीसरे एवं अन्तिम उपखण्ड में डॉ० आशीष त्रिपाठी एवं योगेश त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किये। इस सत्र का संचालन डॉ० प्रवेश तिवारी ने किया।

तत्पश्चात् बघेली हिन्दी कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें विन्ध्य क्षेत्र के प्रमुख रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की।

वेदभाष्यों का लोकार्पण

जो कार्य द्वापर युग में वेदव्यासजी ने किया वही कार्य डॉ० ओमप्रकाश वर्मा ने कलयुग में किया। वेदव्यासजी ने सारी मानवता के लिये कार्य किया, किन्तु उन्हें शान्ति नहीं मिली तब नारदमुनि ने कहा कि तुमने वेदान्त का जिस भाषा में भावानुवाद किया है वह मधुर नहीं है, ना ही जनसामान्य से जुड़ने वाला। तब जैसे नारदमुनि की प्रेरणा पाकर वेदव्यासजी ने सरस''

वेदव्यास जयन्ती एवं ब्रजभाषा काव्य गोष्ठी

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, भरतपुर की ओर से महर्षि वेदव्यास की जयन्ती के उपलक्ष्य में विचार गोष्ठी तथा ब्रजभाषा अकादमी के सौजन्य से ब्रजभाषा काव्य गोष्ठी का आयोजन सनातन धर्मसभा के विशाल कक्ष में किया गया। समारोह के प्रमुख वक्ता संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान प्रो० श्यामलाल शर्मा ने महर्षि वेदव्यास को क्रान्तदृष्टा कवि बताते हुए वेदव्यास द्वारा की गई धर्म की व्याख्या को कालजयी बताया। उन्होंने महाभारत को भारतीय तत्त्व ज्ञान का विश्वकोष बताया। प्रो० शर्मा ने कहा कि जो महाभारत में नहीं है वह भारत में नहीं है। भारत में इस क्रान्त दृष्टा कवि को आदर देते हुए उनकी जयन्ती गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाई जाती है।

महामहोपाध्याय डॉ० रामजी मिश्र को साहित्य गौरव सम्मान

सनातन धर्म परिषद् एवं विश्व तुलसी पीठ लखनऊ ने हिन्दी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, चिंतक, मनीषी साहित्यकार महामहोपाध्याय डॉ० रामजी मिश्र को तुलसी जयन्ती पर 'साहित्य गौरव' सम्मान से सम्मानित किया है। जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज के वाराणसी स्थित श्रीमठ में स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती एवं विश्व तुलसी पीठ के अध्यक्ष डॉ० भगवदाचार्य ने डॉ० मिश्र को श्रीफल, अंगवस्त्रम एवं पाँच हजार रुपये की धनराशि तथा सम्मानोपाधि एक भव्य समारोह में प्रदान किया।

साहित्य को विज्ञापन

साहित्य और कला को राज्य के स्तर पर आर्थिक प्रश्रय दिलाने की जरूरत पर सबसे पहले जोर मध्य प्रदेश में दिया गया। इसके लिए मध्य प्रदेश के सूचना व प्रचार निदेशालय में उन आईएएस अफसरों को समय-समय पर नियुक्त करवाया जो साहित्य, संस्कृति वगैरह में दिलचस्पी या कुछ दखल रखते हों। अशोक वाजपेयी से लेकर सुदप बनर्जी इसी शृंखला के सर्वचर्चित नाम रहे। साहित्यिक पत्रिकाओं को बड़े पैमाने पर विज्ञापन देकर उनकी अर्थव्यवस्था को कृत्रिम साँस देने के बड़े पैमाने पर प्रयोग यहीं से शुरू हुए। परम्परा चलती रही। सरकार बदलने के बावजूद आज विरोधी विचारधारा वाली साहित्यिक पत्रिकाओं को भी विज्ञापन दिया जाता रहा। छत्तीसगढ़ ने भी इसी परम्परा का निर्वाह किया अलग होकर।

दिल्ली सरकार की मुख्यमंत्री ने देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं को बिना माँगे विज्ञापन देने का फैसला किया। उनकी या फिर उनके साहित्य सलाहकारों की सोच थी कि साहित्य को आर्थिक मदद देने का राज्य सरकार का दायित्व आज इसलिए बढ़ गया है कि बाजार ने साहित्य को हाशिए पर धकेल दिया है।

पर बारी अब साहित्यकारों की है। खासतौर पर साहित्यिक पत्रिकाओं के मालिकों की। दिल्ली का हवाला देकर उन्हें अन्य हिन्दी प्रदेशों के मुख्यमंत्री और सूचना-प्रसार निदेशालय पर दीर्घकालिक सूचीबद्ध करने का सकारात्मक दबाव बनाना होगा। साथ ही उन्हें हिन्दी अखबारों का सहारा लेकर ऐसे दबाव की जरूरत की जागृति पैदा करनी होगी।

हिन्दीभाषी प्रदेश के किसी भी पार्टी का कोई मुख्यमंत्री ऐसा तंगदिल नहीं होगा जो उस राज्य के सूचना-प्रसार निदेशालय द्वारा ऐसा प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाने पर अपनी स्वीकृति देने में हिचकिचाए। लेकिन इस रास्ते को समतल बनाने के लिए मीडिया को भी अपनी आवाज को बुलन्द करना होगा।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' अगस्त अंक प्राप्त हुआ। गगनेन्द्र केडिया का लेख 'राष्ट्रभाषा हिन्दी को अंग्रेजी विधा में न लिखें' पढ़ा तथा उस पर चिंतन किया। लेख में हिन्दी शब्दों को रोमन भाषा में लिखने के कई उदाहरण भी दिये गये हैं तथा उन्हें त्रुटि-पूर्ण एवं अस्पष्ट बताया है। इसके कारणों को क्या हमने कभी सोचा है ? और हल ढूँढ़ा है ?

सन् 1899 में सर मोनियर विलियम्स ने 'संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी' लिख कर प्रकाशित की थी, इसमें एक तालिका दी गई है जिसमें हिन्दी शब्दों को रोमन शब्दों द्वारा कैसे लिखा जाये ताकि उससे स्पष्ट उच्चारण हो पाये। मगर विद्वानों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया और यह अज्ञानता चलती ही रही। **— डॉ० निरंजन चन्द्र शाह,** लखनऊ

'भारतीय वाङ्मय' के नियमित अंक प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता होती है। हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की समस्त तथा नवीनतम गतिविधियों की जानकारी अत्यन्त सराहनीय है। हमारी बधाई एवं शुभकामनाएँ। **— किशन बुधिया,** मीरजापुर

'भारतीय वाङ्मय' बराबर पढ़ रही हूँ। आप स्वर्गीय मोदीजी के शुरू किए साहित्यिक प्रयास को सँभाल रहे हैं, यह जानकर सुख मिलता है। पत्रिका अपने लघु कलेवर के बावजूद साहित्यिक गतिविधियों, सूचनाओं के साथ साहित्यिक आलेख, पुस्तक समीक्षा आदि स्तम्भों के माध्यम से पाठकों को रू-ब-रू कराकर महत्त्वपूर्ण दायित्व निभा रहे हैं। हमारी अशेष शुभकामनाएँ।— **चन्द्रकान्ता,** गुड़गाँव

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका के अंक नियमित मिल रहे हैं। प्रकाशन सम्बन्धी सूचनापरक पाठ्य-सामग्री के कारण प्रबुद्ध पाठक यहाँ पसन्द भी कर रहे हैं। **— आनंद दीवान,** देहरादून

'भारतीय वाङ्मय' जुलाई 2008 प्राप्त हुआ, आभार। आप एक विद्वान एवं हिन्दी समर्पित पिता के सुयोग्य पुत्र हैं। प्रकाशन व 'भारतीय वाङ्मय' को सँभाले हुए हैं, बधाई। इस अंक में मुझे सूर्यबाला का व्यंग्य, व्यंग्य स्तर पर अच्छा लगा मगर हिन्दी का भविष्य अंधकारमय नहीं है। इसी अंक में 'साइबर काल में किताबें' भी इसी तथ्य की पुष्टि करती हैं। साहित्य में बाजारवाद आंशिक रूप से सही है। आज 90 प्रतिशत लेखक अर्थ हेतु नहीं, अभिव्यक्ति हेतु लिख रहे हैं। अपने पैसे से पुस्तकें प्रकाशित करवाकर नि:शुल्क वितरित कर रहे हैं। इसका कारण चौपालों, गली-मुहल्लों, घरों में संवाद खत्म होना है। यत्र- तत्र सर्वत्र में 'प्रोफेसरों को मिलेगी सजा' अच्छी बात है, शोध स्तर बढ़ेगा।

M.N.C's को गाँव में माल बेचने के लिए हिन्दी सीखने हेतु मजबूर होना पड़ रहा है। अत: सरकारों की उपेक्षा के बावजूद हिन्दी अग्रसर है।

पुन: 'भारतीय वाङ्मय' का स्वरूप बनाए रखने पर बधाई। **— श्याम सखा श्याम,** रोहतक

पुस्तक परिचय

हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ

सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 216

सजिल्द: रु० 250.00/ **ISBN: 978-81-7124-651-9**
अजिल्द: रु० 120.00/ **ISBN: 978-81-7124-652-6**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस संकलन में कहानियों के चयन का आधार भाषा और शिल्प की दुरूहता नहीं वरन् विषयवस्तु की सहज अभिव्यक्ति और संप्रेषणीयता है। लगभग सभी कहानियाँ अपने समय, समाज और देश-काल का प्रतिनिधित्व करती हैं—किसी गुट या वाद से परे। इस तरह की और बहुत-सी कहानियाँ हैं लेकिन स्थान-सीमा के कारण सभी को या ज्यादातर को ले पाना संभव नहीं हो सका। लेकिन इसमें पुराने और नए कथाकारों का समन्वय जरूर है।

विष्णु प्रभाकर की 'मुरब्बी' आदमी और आदमी के बीच के मानवीय सम्बन्ध की सर्वोपरिता की अभिव्यक्ति है जो धर्म और सम्प्रदाय से परे है।

निर्गुणजी की कहानी 'हारूंगी नहीं' एक खूबसूरत विधवा युवती की कथा है जो एक साथ कई मोर्चे पर लड़ती है। गरीबी से लड़ती है, जमींदार नेता की बुरी नीयत से लड़ती है और अपने आप से लड़ती है। लेकिन वह हार नहीं मानती।

हर्षनाथ की कहानी 'खंडहर का बादशाह' में जमींदारी चली जाने के बाद भी विपन्नता में पल रहे बेटे द्वारा पुरखों की शान के निर्वाह का चित्रण है ।

रामदरश मिश्र की कहानी 'पशुओं के बीच' में सरपंच सिमंगल वृद्ध विधवा कलेना का घर हड़प लेते हैं और गाँव में कोई सुगबुगाहट नहीं होती। ग्राम कथाकार **विवेकी राय** की कहानी 'आकाश वृत्ति' में खेतों में लहलहाती फसल के ओले से बरबाद हो जाने के बाद निरीह किसानों की मन:स्थिति का मार्मिक वर्णन है।

ठाकुर प्रसाद सिंह की कहानी मौजूदा समाज में तेजी से पनप रहे खुलेपन पर आधारित है।

अमरकांत की कहानी 'जिंदगी और जोंक' में एक मरियल व्यक्ति की जीने की अभिलाषा जोंक की तरह उसकी छीन चुकी जिंदगी में लिपटी है। **धर्मवीर भारती** की 'गुलकी बन्नो' में पति को परमेश्वर समझनेवाली पारम्परिक और चरित्रभ्रष्ट पति को तिरस्कृत करनेवाली आधुनिक सोच के बीच संघर्ष है।

शिवप्रसाद सिंह की 'आदमखोर पैंथर' जमींदार के खिलाफ दलितों का प्रतिरोध, दलित नेताओं द्वारा जमींदार से गुप्त समझौता और भ्रष्ट पुलिस (व्यवस्था) का त्रिकोण प्रस्तुत करती है।

मनु शर्मा की कहानी 'लंगड़ा हाजी' माफिया और अपराधियों द्वारा भोले हजयात्रियों को ठगे जाने का गहरा चित्रण है तो **राजी सेठ** की कहानी 'कब तक' में सास द्वारा एक घरेलू नौकर को बात-बात पर प्रताड़ित किए जाने और बहू द्वारा उसके प्रति सहानुभूति की विवश संवेदना है।

डॉ. विश्वनाथप्रसाद की 'प्याज के छिलके' में मध्यवर्ग की अकेली घुटती हुई नारी का दर्द है।

नारी सशक्तीकरण की कथाकार **प्रतिमा वर्मा** की 'दूरस्थ' कहानी इसी कारण चर्चित रही।

गोविंद मिश्र की कहानी 'आल्हखंड' में मूल धरती से लगाव का संवेदनात्मक वर्णन है।

रवीन्द्र कालिया की कहानी 'काला रजिस्टर' सरकारी विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार की पोल खोलती है तो **ममता कालिया** की कहानी 'मा' उस परबसता का बोध कराती है जिसमें बहू की हैसियत खूंटे से बँधी उस गाय जैसी होती है जो अपने मालिक के रहमोकरम पर जीती है।

बच्चन सिंह की कहानी 'मायाजाल' गाँव के निम्नवर्गीय युवक की सरकारी नौकरी से छंटनी की त्रासदी, अंधविश्वास और उपभोक्ता संस्कृति के फैलाव के भावबोध की सशक्त अभिव्यक्ति है।

अखिलेश की कहानी 'मुक्ति' में राजनीति में बिरादरीवाद जैसी विद्रूपताओं, युवा-शक्ति की उलझनपूर्ण दिशाहीनता उभारी गई है तो **संजीव** की 'मांद' एक ऐसे परिवार की कथा है जो सम्पत्ति के लालच में अपने अल्पवयस्क पुत्र की शादी पड़ोस के धनाड्य व्यक्ति की एकमात्र पुत्री से कर देता है, पर बाद में न तो उसे सम्पत्ति मिलती है और न बहू।

'दरारें' के बारे में स्वयं **शैलबाला** कहती हैं—'कोई अपनी इच्छा से नहीं लड़ रहा, पर कहीं सब लड़ने के लिए मजबूर हैं।

'सहमे हुए' कहानी में **महीप सिंह** ने देश के विभाजन के बाद के साम्प्रदायिक दंगों से सहमे हुए लोगों का बेहद मार्मिक चित्र खींचा है।

मालचन्द निवाड़ी की कहानी 'पानीदार' में धनी सेठानी की धन के प्रति हवस इतनी बढ़ जाती है कि वह एक गरीब व्यक्ति के गहने चुरा लेती है। **नीरजा माधव** ने कांवेण्ट स्कूलों के जरिए ईसाइयत के विस्तार और अपसंस्कृति के भारतीय संस्कृति एवं जीवन-दर्शन पर छद्म प्रहार को पाठकों तक सम्प्रेषित किया है।

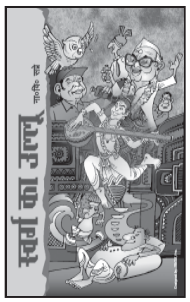

स्वर्ग का उल्लू

ना०वि सप्रे

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 116

सजिल्द: रु० 100.00

ISBN: 978-81-89498-28-3

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

'स्वर्ग का उल्लू' समय-समय पर लिखे गए सप्रेजी के व्यंग्यजन्य लेखों का संकलन है। सप्रेजी ने समाज में दिखाई पड़नेवाली छोटी से छोटी बातों और मानवीय हरकतों को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है जैसे गर्दन हिलाना, फोटो खिंचवाना, खर्राटे भरना, नाक से बोलना, नहाना और सोना। विषय छोटे हैं लेकिन इनके बहाने बातें बड़ी की गई हैं और वे भी इतने अनौपचारिक और सहज ढंग से आत्मीयता के साथ कि पढ़ने के तनाव का अहसास ही नहीं होता। हम देखते रह जाते हैं और समाज की विसंगतियों का चेहरा उघड़ता चला जाता है।

—डॉ० काशीनाथ सिंह

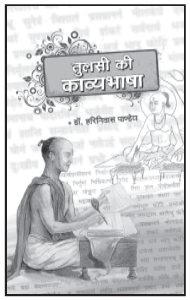

तुलसी की काव्यभाषा

डॉ० हरिनिवास पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 112

सजिल्द: रु० 120.00/ **ISBN: 978-81-7124-663-2**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भक्तिकाल के कवियों में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान सर्वोपरि है। उनकी पंक्तियाँ शिक्षित-अशिक्षित सबकी जुबान से सुनने को मिलती हैं। उनका 'मानस' परम्परावादी लोगों को जितना प्रिय है, उतना ही आधुनिक पाठकों को भी। वह जितना प्रिय धर्म के अनुयाइयों को है उससे कम प्रिय धर्म का निषेध करने वालों को नहीं। इसका एक ही मुख्य कारण है कि वह हर तरह जन-जीवन से जुड़ा है। तुलसी का काव्य प्रेम, संघर्ष, आत्मसम्मान एवं निष्कम्प आत्मविश्वास का काव्य है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में यदि कहें तो—''उनकी वाणी के प्रभाव से आज भी हिन्दू भक्त, अवसर के अनुसार सौन्दर्य पर मुग्ध होता है, सम्मार्ग पर पैर रखता है, विपत्ति में धैर्य धारण करता है, कठिन कर्म में उत्साहित होता है, दया से आर्द्र होता है, बुराई पर ग्लानि करता है, शिष्टता का अवलम्बन करता है और मानव जीवन के महत्त्व का अनुभव कराता है।''

हंस (आत्मकथांक)
(1932 ई०)

सम्पादक : **प्रेमचंद**

प्रथम संस्करण : 1932 ई०

प्रथम आवृत्ति : 2008 ई०

पृष्ठ : 208

अजिल्द: रु० 180.00/ **ISBN: 978-81-7124-631-1**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

76 वर्षों बाद प्रेमचंद सम्पादित 'हंस' के 'आत्मकथा अंक' का पुनर्प्रकाशन

पिछले वर्षों प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती पूरे देश में, सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर, धूमधाम से मनाई गई थी। वैसे वायदे तो अनेक किए गए लेकिन प्रेमचंद के लेखन और विचार पर केन्द्रित विमर्शों से स्पष्ट रूप से प्रेमचंद के विचार राष्ट्र, समाज और परिवार के बारे में जिस तरह उभरकर आए उससे लगा कि प्रेमचंद के सही मूल्यांकन में अब भी हमसे कहीं चूक हो रही है।

अब 76 वर्षों बाद विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रेमचंद द्वारा सम्पादित 'हंस' के आत्मकथा अंक का पुनर्प्रकाशन हमारे समय की एक बड़ी साहित्येतिहासिक घटना है। खासकर नई पीढ़ी के लिए, जिसने 'हंस' (प्रेमचंद) नहीं देखा है। प्रेमचंद के सम्पादन में 1930 ई० में बनारस से वसंत पंचमी के दिन कथा मासिक 'हंस' का प्रकाशन हुआ। उनके जीवनकाल में इस पत्रिका के दो महत्त्वपूर्ण विशेषांक निकले—'आत्मकथा अंक' और 'काशी अंक'। इस पत्रिका के लिए उन्हें जुर्माना भरना पड़ा, बल्कि बम्बई जाकर अजंता सिनेटोप में भी काम करना पड़ा ताकि पत्रिका का घाटा पूरा कर सकें। लेकिन दु:खद बात यह हुई कि उनके जीवनकाल में ही 'हंस' उनके हाथ से निकल गया, जिसका गहरा मलाल प्रेमचंद को था जिसे 'जमाना' के सम्पादक दया नारायण निगम को लिखे पत्र में उन्होंने व्यक्त किया है। 1936 ई० में उनकी मृत्यु के बाद भी जैसे-तैसे 'हंस' का प्रकाशन जारी रहा और इसका अन्तिम अंक अक्टूबर, 1957 में उनकी स्मृति में साहित्य संकलन-1 के रूप में बालकृष्ण राव और अमृत राय के सम्पादन में निकला। विडम्बना की बात यह है कि अन्तिम आवरण पृष्ठ पर संकलन-2 निकालने की घोषणा थी, लेकिन अंतत: जो नहीं निकला। लगभग 29 वर्षों बाद 'हंस' के पुनर्प्रकाशन का दुस्साहस किया राजेन्द्र यादव ने और पत्रिका का पहला अंक निकला अगस्त 1986 में। इस अंक के साथ पत्रिका ने अपने पुनर्प्रकाशन के 22 वर्ष पूरे करके 23वें वर्ष में प्रवेश किया है।

प्रेमचंद द्वारा सम्पादित 'हंस' के आत्मकथा अंक का प्रवेशांक संयुक्तांक जनवरी-फरवरी 1932 में निकला। प्रेमचंद का यह एक नया प्रयोग था और वे चाहते थे कि आत्मकथा के बहाने हम अपने समकालीन साहित्यकारों की निजी जिन्दगी से पाठकों को परिचित कराएँ। लेकिन आलोचक नंद दुलारे वाजपेयी ने आत्मकथा अंक को सम्पादक का आत्मविज्ञापन मानकर इसकी तीव्र भर्त्सना की, जिसका असर तो नहीं हुआ लेकिन विवाद तो उठा। 'हंस' के इस अंक में लगभग 52 लेखकों का सहयोग है—विभिन्न विधाओं में। लेकिन अब इस अंक की सात या आठ उल्लेखनीय रचनाओं पर विचार करना ही मेरा अभिप्रेत है। बाबू जयशंकर प्रसाद ने अपनी आत्मकथा कविता में लिखी—''मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया/आलिंगन में आते-आते मुसक्याकर जो भाग गया।'' आलोचक पं० रामचन्द्र शुक्ल ने 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' जैसा संस्मरण लिखा जिससे पता चलता है कि प्रेमघन के प्रति उनकी कितनी श्रद्धा थी। बाबू शिवपूजन सहाय ने अपने बारे में तो नहीं लिखा लेकिन कलकत्ता से निकलने वाली पत्रिका 'मतवाला' की आत्मकथा जरूर लिख दी—'मतवाला कैसे निकला'। सम्भवत: 'मतवाला' के प्रकाशन के बारे में इससे ज्यादा प्रामाणिक जानकारी अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा की डायरी के पृष्ठ तो जैनेन्द्र कुमार की आध्यात्मिकता के पूर्वरंग लिये हुए हैं। इसी तरह पं० केदारनाथ पाठक का लेख 'आचार्य द्विवेदीजी तथा सरस्वती' के साथ जैनेन्द्र कुमार के गाँधी के साथ कश्मीर यात्रा के अनुभवों पर भी गौर करने की जरूरत है। शिवरानी देवीजी की 'मेरी गिरफ्तारी' और पं० राधेश्यामजी कथावाचक का 'मेरा नाटकीय और उसके अनुभव' भी महत्त्वपूर्ण हैं। मुंशी अजमेरी का लेख 'महात्माजी के चरणों में' और अन्त में प्रेमचंद का लेख—'जीवनसार' तो अनमोल है जिसका उपयोग मदनगोपाल ने 'प्रेमचंद की आत्मकथा' लिखने में किया और अमृतराय ने 'प्रेमचंद : कलम का सिपाही' में।

इस पत्रिका के पुराने ऐतिहासिक अंक का प्रकाशन इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि तमाम विवादों के बावजूद इसी अंक से हिन्दी में आत्मकथा और संस्मरण लिखने की परम्परा की जमीन पुख्ता होती है। इसके प्रकाशन के बारे में सबसे अच्छी बात है कि उसी पुराने टाइप, सम्भवत: कागज भी और कलेवर और साज-सज्जा के साथ इसे प्रकाशित किया गया है। जब यह अंक छपा था 1932 में इसका मूल्य सवा रुपये था, 76 वर्षों बाद सिर्फ 180 रुपये, जो महत्त्व की दृष्टि से बहुत कम है। यह योजना स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी की थी। इसकी संक्षिप्त भूमिका उन्होंने लिखी है। इसलिए उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मुझे जरूरी लगता है।

—भारत भारद्वाज

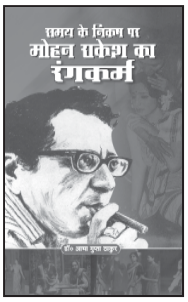

समय के निकष पर मोहन राकेश का रंगकर्म

डॉ० आभा गुप्ता ठाकुर

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 224

सजिल्द: रु० 250.00/ **ISBN: 978-81-7124-648-9**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अपने नाटकों के माध्यम से मोहन राकेश ने न केवल हिन्दी नाटक और रंगमंच को एक नई दिशा दी, बल्कि भारतीय नाट्य परम्परा में उसे महत्त्वपूर्ण स्थानपर प्रतिष्ठित भी किया। उनके नाटकों ने हिन्दी रंगांदोलन को तो अभूतपूर्व गति और समृद्धि प्रदान की ही है, साथ ही हिन्दी नाटककारों की भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य भी किया है। यह पुस्तक स्वातन्त्र्योत्तर भारत के 'प्रथम आधुनिक' नाटककार मोहन राकेश के नाटकों पर विषय केन्द्रित नया विमर्श है। राकेश के नाटकों के 'पाठ' को 'समय के निकष' को प्रतिमान बनाकर इस तरह से पढ़ा गया है कि अर्थ की बहुलार्थक ध्वनियाँ नई अनुगूँजों की निष्पत्ति करती हैं। डॉ० आभा गुप्ता ठाकुर ने मोहन राकेश के नाटकों के अर्थ सन्दर्भों को पूरी विश्वसनीयता के साथ इस पुस्तक में उजागर किया है।

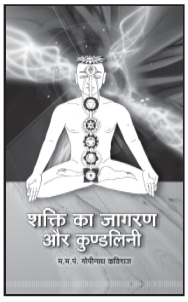

शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी

म.म.पं. गोपीनाथ कविराज

संस्करण : 2008

पृष्ठ : 216

अजिल्द: रु० 100.00

ISBN: 978-81-7124-660-1

विश्वविद्यालय प्रकाशन

इस पुस्तक में अनेक भक्त जिज्ञासुओं द्वारा कविराजजी से समय-समय पर किये गये प्रश्नों के उत्तर संगृहीत हैं। ज्ञान में रुचि रखने वाले पाठक इस पुस्तक को एक ही बार पढ़कर तृप्त नहीं होंगे बल्कि बार-बार पढ़ेंगे। इसमें सत्संग, सिद्धि और ज्ञान की पूर्णता, व्याहृतितत्त्व, क्षण-संकल्प और विकल्प, भगवत्प्रेम, रसब्रह्म की साधना, गीता और अखण्ड योग, गुरुभाव, कालराज्य, शक्ति क्या है और उसके जागरण से क्या तात्पर्य है आदि विषयों पर चर्चा है।

अब तो बात फैल गई
(यादों, विवादों और संवादों की संस्मरणात्मक प्रस्तुति)

कान्तिकुमार जैन

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 268

सजिल्द: रु० 250.00/ ISBN: 978-81-7124-586-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मनमोहनी व्यंजनों का आस्वाद

जो लोग साहित्य को क्रिकेट से कम से कम एक किलोमीटर दूर रखना पसन्द करते हैं, उन्हें इस जुमले से निश्चित ही शिकायत होगी, लेकिन उनसे क्षमा माँगते हुए यह कहने की दिली तमन्ना है कि कांतिकुमारजी समकालीन हिन्दी साहित्य में संस्मरणों के सचिन तेंदुलकर हैं। खिलाड़ी तो युवराज सिंह भी बड़े ताकतवर हैं, जो एक ही ओवर में छ:-छ: छक्के लगा देते हैं और द्रविड़ का तो कहना ही क्या जिनका डिफेन्स बहुत मजबूत है, लेकिन सचिन को जीनियस इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनमें आक्रमण भी है और डिफेंस भी, क्लास भी है और इंटरटेनमेंट भी। कांति कुमारजी किसी बात को नमक-मिर्च लगाकर या मिर्च-मसाला डालकर मजेदार नहीं बनाते, वे मिर्च-मसाले के ऊपर नींबू भी छिड़कते हैं, कच्ची केरी के टुकड़े भी डालते हैं, साइट्रिक एसिड के छींटे भी मारते हैं, कटा हुआ हरा धनिया और आड़ी कटी हुई हरी मिर्च भी डालते हैं, इसलिए उनके संस्मरण लज्जतदार, सुस्वादु और मालवे के शब्दों में कहें तो झन्नाट होते हैं। जिस प्रकार महेश भट्ट जैसे कुशल निर्देशक के हाथों राहुल रॉय और जॉन अब्राहम जैसे ठूँठ भी अभिनय कर गुजरते हैं, उसी प्रकार कांतिकुमारजी का स्पर्श पाकर पप्पू खवास जैसे हाशिए पर बैठे लोग भी स्टार बन जाते हैं। 'हंस', 'वसुधा' और 'नया ज्ञानोदय' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित संस्मरणों और फिर उनके 'तुम्हारा परसाई', 'लौट कर आना न होगा' व 'जो कहूँगा सच कहूँगा' संकलनों में पढ़ने के बाद वे आम हिन्दी पाठकों के बीच सत्तर के दशक के दुष्यंत कुमार, अस्सी के दशक के शरद जोशी, नब्बे के दशक के अमृतलाल वेगड़ की ही तरह मौजूदा दशक के सबसे लोकप्रिय व पसंदीदा लेखक बन गए हैं। हाल ही में उनकी किताब 'अब तो बात फैल गई' आई है, जिसमें उन्होंने अपनी यादों, विवादों और संवादों को संस्मरणात्मक रूप से प्रस्तुत किया है।

सफलता किसी भी सृजनशिल्पी के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही लाती है कि वह अपनी एकबारगी सफलता से कोई फार्मूला न बना लें। उसे अपने ही बनाए ढर्रे और फार्मूले को तोड़ना होता है, वरना वह टाइप्ड होकर रह जाता है। कांतिकुमारजी ने भी इस बार अपने संस्मरण में पिछली बार के मुकाबले एक नए रंग का समावेश किया है। अब तक उनके संस्मरणों मेल मुलाकातों और यार-दोस्तों से सुने-सुनाए अनुभवों पर आधारित हुआ करते थे, इस बार उन्होंने अपनी जमीन को तोड़ते हुए कुछ ऐसे लोगों पर संस्मरण लिखे हैं, जिनसे वे कभी मिले नहीं। सुभद्राकुमारी चौहान और नजीर अकबराबादी के बारे में लिखने से पहले वे भूमिका में सवाल करते हैं जो लोग कभी हमारे सम्पर्क में नहीं रहे या हमारे आत्मीय नहीं रहे, क्या वे संस्मरणीय हो सकते हैं? फिर इस सवाल का जवाब तलाशते हुए वे कहते हैं कि किसी भी संस्मरण की आत्मा 'फील' है और यह 'फील' उन्होंने नजीर की कब्र के पास, उनके मुहल्ले के लोगों से चर्चा कर अनुभूत किया। इसी प्रकार वे सुभद्राजी के बेटे-बेटियों, नाते-पोतियों और उनके द्वारा लगाए गए पेड़ों से मिले और उन्हीं से इस 'फील' को ग्रहण किया। पुस्तक के पहले खण्ड में इन दोनों के अलावा डॉ० हरीसिंह गौर, जयशंकर प्रसाद, भगीरथ मिश्र, राजेन्द्र यादव और हरिशंकर परसाई पर भी संस्मरण हैं। इनमें सबसे ज्यादा ध्यान आकृष्ट करता है अपने जीवनभर की पूँजी से सागर विश्वविद्यालय खोलने वाले डॉ० हरीसिंह गौर का संस्मरण 'दमड़ी दमड़ माया जोड़ी'। गौरजी ने एक-एक पैसे जोड़कर यह विश्वविद्यालय बनाया था, उसकी प्रक्रिया बहुत मार्मिक और बहुत ही मजेदार है। गौर साहब दाढ़ी बनाने से पहले जब सेवन ओ क्लॉक का रैपर निकालते तो उस पर 1 से 8 तक की गिनती अंकित कर देते। एक ओर 1, 2, 3, 4 और दूसरी ओर 5, 6, 7 और 8। यानी एक ब्लेड से आठ बार शेव करना ही है। आठ बार चल चुका वह ब्लेड भी फेंका नहीं जाएगा। कल सबेरे जब उनका खानसामा आएगा, तो चाय बनाने के लिए स्टोव जलाने से पहले माचिस की तीली को दो फाड़ करना होगा—आधा हिस्सा सुबह के लिए, आधा हिस्सा शाम के लिए। अब खानसामे की किस्मत कि उसी आधी तीली से काम चल जाए, वरना नहीं जल पाए तो मास्टरजी की डाँट सुनने के लिए तैयार रहो या अपनी जेब से तीली निकाल कर जलाओ और माचिस खुद जेब के हवाले कर दो। मास्टरजी असावधान नहीं थे। एक डिब्बे में जली हुई तीलियाँ इकट्ठी करनी पड़ती। इतवार की शाम को डिब्बे में जली हुई तीलियों की संख्या 14 से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। न ही कोई तीली मोटी या पूरी होनी चाहिए। खानसामे का ध्यान खाना बनाने पर जितना होता, उतना ही तीली के उपयोग व संरक्षण पर।

दूसरा खण्ड विवादों पर केन्द्रित है। इनमें लेखक के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित वे लेख संकलित हैं, जो काफी विवादित रहे। 'अश्लीलता का हिन्दी चेहरा' में संस्कृत के उद्भट विद्वान पण्डित शास्त्रीजी लेखक को यह बतलाते हैं कि पिछले दिनों उनके एक विभागीय सहयोगी को अपनी शोध-छात्रा के साथ कुकर्म करते हुए लोगों ने रँगे हाथों पकड़ लिया। उन्हें उन्हीं के छात्रों ने निर्वस्त्र किया और उल्टे मुँह गर्दभारूढ़ कर पूरे नगर में उनकी शोभायात्रा निकाली। इस शोभायात्रा में कुछ चपल छात्र एक यष्टिदंडिका से उनके शिश्न को दोलायित करने में संलग्न रहे। लेखक ने अभद्रता की—पण्डितजी खुलकर हिन्दी में बतलाइए, क्या हुआ, कैसे हुआ? पण्डितजी सावधान हो गए। बोले—जो कुछ हुआ मैं सब बता चुका हूँ। हिन्दी में यह सब अश्लील हो जाएगा। यहां वे निष्कर्ष निकालते हैं कि अश्लील न पद है न पदार्थ। अश्लील है उसकी प्रकटीकरण-बोधगम्य भाषा में। इसी खण्ड में 'शुद्ध हिन्दी असम्भव सी बात है' लेख में उन्होंने भाषा में शुद्धता का आग्रह रखने वालों की दिलचस्प तरीके से खिंचाई की है। वे लिखते हैं—हिन्दी के शब्दकोशों के सहारे हम आज के भारत की राजनीतिक यथार्थताओं, सामाजिक विसंगतियों, आर्थिक उलझनों और सांस्कृतिक प्रदूषणों को पूरे विस्तार में नहीं समझ सकते। हिन्दी के शब्दकोशों में न तो दबिश है न सुपारी, अगवा, फिरौती, बिंदास जैसे शब्द। सुनामी लहरों से दक्षिण पूर्वी भारतीय तटवर्ती क्षेत्रों में तबाही मची थी, उसको समझने में हिन्दी का कोई शब्दकोश हमारी सहायता नहीं करता। सुनामी शब्द के हिन्दी शब्दकोश में शामिल किए जाने के लिए पता नहीं हमें कितनी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। सुनामी जापानी शब्द है। क्या 5हमें इसे अंगीकार नहीं कर लेना चाहिए। सुनामी शब्द को हिन्दी के स्वाभिमान के नाम पर हम भले ही अपांक्तेय मानें, पर सुनामी लहर न तो इंडोनेशिया का लिहाज करती है, न ही बंगाल या श्रीलंका का।

कांतिकुमारजी कई बार हिन्दी के क्षेत्रीय या कम चर्चित शब्दों का प्रयोग करते हैं। लेकिन पाठकों को चौंकाने या आलोचकों को प्रभावित करने की दुर्मंशा से नहीं। ये शब्द उनके संस्मरणों में अनायास आ जाते हैं, वे उन्हें आने देते हैं, लेकिन आगे बढ़ने से पहले उस शब्द से पाठकों को अच्छी तरह परिचित कराते हैं। 'हिन्दी समीक्षकों की बिडाल राशि अर्थात् बिल्ली की नजर छीछड़ों पर' लेख में उन्होंने लेखक पर पिल पड़ने वाले कुछ उत्साही पत्र-लेखकों की हरी बेंत से पिटाई की है। लेकिन इससे पहले वे बिडाल और छीछड़ा शब्दों की व्याख्या करना नहीं भूलते। बिडाल यानी बिल्ली और छीछड़ यानी मांस के हड्डीयुक्त वे टुकड़े जो खाने वाला खा-खू कर

अपनी थाली, पत्तल या तश्तरी में छोड़ देता है। बिडाल इस ताक में रहता है कि पंगत उठे या मेज साफ हो तो वह अपनी क्षुधा शान्त करे। इस छीछड़ापरस्ती से बिल्ले की भूख भी मिटती है और दाँतों की कसमसाहट भी शान्त होती है।

किताब के तीसरे खण्ड 'संवाद' में रमेशदत्त दुबे, देवेन्द्र कुमार आर्य और साधना अग्रवाल द्वारा कांतिकुमारजी से लिए गए तीन साक्षात्कार शामिल हैं। इन साक्षात्कारों के जरिए उनकी रचना प्रक्रिया को समझने में पाठकों को बहुत मदद मिलती है। यदि बातचीत रचना पर ही हो, तो कई बार बोर होने लगता है, लेकिन पाठक की क्या मजाल कि वह कांतिकुमार को पढ़े और बोर हो जाए। इसीलिए जब साधना अग्रवाल उनसे यह पूछती हैं कि आज हर नया लेखक कांतिकुमार जैन बनने की कोशिश में लगा है, आप इस स्थिति को किस रूप में देखते हैं तो जवाब में वे पहले एक लतीफा सुनाते हैं। स्कूल में पढ़ने वाले और नए-नए तरुण हुए छात्र को उसके एक सहपाठी ने प्रेम प्रसंग में निपटारे के लिए द्वंद्व युद्ध में ललकारा। यह युद्ध तलवारों से लड़ा जाना था। ललकारित छात्र ने अपने पिताजी से कहा कि पिताजी आप मेरे लिए एक लम्बी तलवार बनवा दें, जो सहपाठी की तलवार से छः इंच लम्बी हो। पिताजी समझ गए। बोले—बेटे! यदि तुम्हें सामने वाले को परास्त करना है तो छः इंच आगे बढ़कर मारो। इस तरह के युद्ध तलवार की लम्बाई से नहीं, भीतर के हौसले से लड़े जाते हैं। यदि किसी का मेरुदण्ड कमजोर हो तो न तो तलवार की लम्बाई काम आती है, न पिताजी का संरक्षण। ऐसे लोगों को संस्मरण नहीं लिखने चाहिए।

कांतिकुमारजी के ही बुन्देलखण्ड में एक शब्द है—जी जुड़ा गओ। आमतौर पर इस कहावत का इस्तेमाल कोई जायकेदार पकवान जी भर कर खाने के बाद पेट पर हाथ फेरते हुए किया जाता है। कहना न होगा, 'अब तो बात फैल गई' के मनमोहनी व्यंजनों का आस्वाद करने के बाद हमारौ भी जी जुड़ा गओ।

—शशांक दुबे

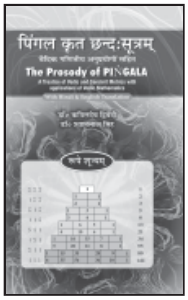

पिंगल कृत छन्दःसूत्रम्

[वैदिक गणितीय अनुप्रयोगों सहित] (हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद सहित)

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
डॉ० श्यामलाल सिंह

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 340

सजिल्द : रु० 300.00 (ISBN : 978-81-7124-634-2)
अजिल्द : रु० 200.00 (ISBN : 978-81-7124-635-9)

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

गुप्त भारत की खोज

पॉल ब्रंटन

संस्करण : 2008

पृष्ठ : 112

अजिल्द: रु० 125.00

प्रकाशक :

मानस ग्रन्थागार, वाराणसी

इस पुस्तक का नाम यदि 'पवित्र भारत' होता तो बहुत ही उचित होता, कारण कि यह वर्णन उस भारत की खोज का है जो पवित्र होने के कारण ही गुप्त है। जीवन की अति पवित्र बातें कभी साधारण जनता के सामने प्रदर्शित नहीं की जातीं। मनुष्य का सहज स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि वह ऐसी बातों को अपने ही अन्तरतम तल के निगूढ़ कोषागार में ऐसी सावधानी के साथ छिपाये रहता है कि शायद ही किसी को उनका पता लग पाता हो। उनका पता लगा लेने वाले वे ही थोड़े से व्यक्ति होते हैं जिनको आध्यात्मिक विषयों की सच्ची लगन होती है।

श्री ब्रण्टन की लगन इसी प्रकार की थी और वे अन्त में सफल ही हुए। उन्हें बड़ी कठिनाइयों का कामना करना पड़ा; क्योंकि और देशों की भाँति भारत में भी आडम्बरपूर्ण आध्यात्मिकता का जाल फैला हुआ है और सत्य का पता लगाने के लिए इस झूठे जाल को काट कर आगे क़दम रखना पड़ता है। सच्ची आध्यात्मिकता के जिज्ञासु को अगणित आध्यात्मिक ढोंगियों और नटों जैसी कलाबाज़ी करने वाले व्यक्तियों के झुण्डों की उपेक्षा करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है।

श्री ब्रण्टन जिस गुप्त और पवित्र भारत की खोज करने गये थे उसका इस कोटि के व्यक्तियों से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे आध्यात्मिक अनुभूति के शुद्धतम और अत्यन्त निर्मल रूप का दर्शन करना चाहते थे और अन्त में उनकी साध पूरी भी हुई।

श्री ब्रण्टन ने नगरों से दूर निर्जन नीरव जंगलों में, या हिमालय की तराइयों में भारत की मूर्तिमान पवित्रता का दर्शन पाया है, क्योंकि भारत के सच्चे साधु-महात्मा ऐसे ही स्थानों में जाकर निवास करते हैं। श्री ब्रण्टन सबसे अधिक 'महर्षि' के साक्षात्कार से प्रभावित हुए। भारत-भर में वे अपने ढंग के केवल अकेले नहीं हैं। भारत के कोने-कोने की छानबीन करने पर इसी उच्चकोटि के व्यक्ति मिल सकते हैं, परन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं किन्तु बहुत ही कम है। ये ही भारत की सच्ची प्रतिभा के परिचायक हैं और ऐसे ही सच्चे साधुओं में परम पिता परमेश्वर विभिन्न अंशों में अपने को व्यक्त करता है।

अत: ऐसे महात्मा ही इस जगत् में जिज्ञासुओं की खोज के परम योग्य लक्ष्य हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में इसी प्रकार की एक सफल खोज का परिणाम हमारे सामने उपस्थित किया गया है।

शिक्षा से शिखर को जीता

ज्ञान की गाड़ी में बैठकर उपेन्द्र जे० चिविकुला अमेरिका की न्यू जर्सी की स्टेट एसेम्बली तक पहुँचे हैं। चेन्नई की एक झुग्गी से अपना सफर शुरू करने वाले चिविकुला का भी मानना है कि शिक्षा के अधिकार ने ही उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया है। चिविकुला अमेरिकन डेमोक्रेटिक पार्टी से जुड़े हैं। 8 अक्टूबर 1950 में तमिलनाडु के वेल्लोर में जन्मे चिविकुला न्यू जर्सी स्टेट एसेम्बली के डिप्टी स्पीकर हैं। वे पहले एशियन इण्डियन अमेरिकन हैं, जो इस पद तक पहुँचे हैं। उनकी यह बेमिसाल उपलब्धि कड़ी मेहनत और सकारात्मक सोच का नतीजा है। चिविकुला की स्कूली शिक्षा तेलुगू में हुई। शुरुआत में उन्हें अंग्रेजी से डर लगता था। लेकिन कॉलेज पहुँचने पर उन्होंने अंग्रेजी जैसा कठिन माध्यम चुन लिया। अगर अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाई करना मुश्किल था, तो उससे भी कठिन थी इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाई। उपेन्द्र कहते हैं कि मेरे पिता बेरोजगार थे, उनके पास मुझे पढ़ाने के लिए पैसे नहीं थे। मगर मैंने कई सपने देख रखे थे, भले ही वे मेरी पहुँच से दूर थे। सपनों को साकार करने के लिए मुझे लगा कि शिक्षा से बड़ी कोई चीज हो ही नहीं सकती। आखिर चिविकुला का अद्‌भुत संकल्प रंग लाया और उन्हें मेरिट के आधार पर इंजीनियरिंग कॉलेज में स्कॉलरशिप मिल गई। पैसे की तंगी तो दूर नहीं हुई मगर चिविकुला इससे उबरने में कामयाब हो गए। चिविकुला के पिता चाहते थे कि वे कमाना शुरू कर दें। दरअसल यह पैसे कमाने का ही दबाव था जिसकी वजह से चिविकुला अमेरिका चले गए। 1976 में न्यूयॉर्क की सिटी यूनिवर्सिटी से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में मास्टर डिग्री हासिल करने के बाद उन्होंने सीबीएस ज्वाइन कर लिया। संयोग से 1980 के दशक में उनके राजनीतिक करियर की शुरुआत उस वक्त हो गई, जब न्यू जर्सी शहर में भारतीय अमेरिकी समुदाय के लोग एक स्ट्रीट गैंग के अपराधों के शिकार बन रहे थे। ऐसे में चिविकुला भारतीय समुदाय के नेता बनकर उभरे और उन्हें संगठित करना शुरू किया। उन्होंने इण्डियन अमेरिकन पॉलिटिकल फोरम ज्वाइन किया और राजनीति में कूद पड़े। जल्द ही चिविकुला ग्रासरूट लेवल से उठकर टॉप पर पहुँच गए। चिविकुला अब न्यू जर्सी राज्य की असेंबली के डिप्टी स्पीकर बन चुके हैं। अपनी शानदार उपलब्धियों के बावजूद पूरी तरह विनम्र चिविकुला की भारतीय शिक्षा प्रणाली में पूर्ण आस्था है और वह इसके बड़े प्रशंसक हैं। एक राजनीतिज्ञ के रूप में एजुकेशन उनकी प्राथमिकता में सर्वोपरि है। उन्होंने एशियन अमेरिकन स्टडी फाउण्डेशन की भी स्थापना की है।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

लेखनी के स्वतंत्रता-सेनानी : डॉ० तपेश्वरनाथ, प्रकाशक : लेखक द्वारा स्वयं, मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली-110092 के सहयोग से प्रकाशित, पुस्तक प्राप्ति स्थान : 9, लालबाग, तिलका माँझी, भागलपुर-812001, मूल्य : 120.00 रुपये

आधुनिक हिन्दी साहित्य के आरम्भ से विकास तक की लगभग एक शती विस्तृत पृष्ठभूमि पर लिखे गये नौ निबन्ध-आलेखों का संकलन है 'लेखनी के स्वतंत्रता सेनानी'। सन् 1857 से 1947 ई० के भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के बीच भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से रामधारी सिंह दिनकर तक की हिन्दी साहित्य यात्रा सम्पन्न हुई है। इसी अवधि में भारतीय-पुनर्जागरण और सांस्कृतिक आत्मगौरव का उन्मेष भी हुआ जो साहित्य की युग-प्रेरणा बनकर अभिव्यक्त हुआ। इसी कालखण्ड में हिन्दी-भाषा का पुनर्विन्यास एक प्रक्रिया बनकर प्रत्येक साहित्य-विधा में दिखलायी पड़ा, जिसने हिन्दी-भाषा का वर्तमान प्रारूप तैयार किया है। बर्तानवी-हुकूमत से संघर्ष से इस अवधि में साहित्य-रचना और प्रकाशन कई बार शासन-तंत्र द्वारा बाधित किया गया किन्तु रचनाकारों ने शासकीय अत्याचार झेलते हुए स्वतंत्रता के महायुद्ध में सतत योगदान दिया। इन सभी बिन्दुओं की आख्या हैं इस प्रबन्ध के नव-निबन्ध।

तनाव : (साहित्य की पत्रिका, अंक : 105/106), सम्पादक/प्रकाशक : वंशी माहेश्वरी, सन्तावण, मंगलवारा, पिपरिया-461775 (म०प्र०), मूल्य : 10/- रुपये

पत्रिका के ये दोनों ही अंक विदेशी काव्यानुवाद के कारण विवेच्य हैं। **अंक : 105** में समकालीन फ्रांसीसी कवि जाक दुपाँ की कविताओं का सुरेश सलिल द्वारा अंग्रेजी से किया गया अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। जाक दुपाँ सहज शैली में अपनी कविताओं का स्थापत्य रचते हैं जो प्रभाववादी चित्रकला और अस्तित्ववादी निर्वसनता के बीच विकसित हुआ है। उनके काव्य-बिम्ब मूर्तन और अमूर्तन के बीच की निश्शब्दता से निकलते प्रतीत होते हैं। ×× ''लिखना, जैसे मैं कभी जन्मा ही नहीं।/हर शब्द इस क्षण तक : चकनाचूर; अनावृत, असारता में साँस रोके हुए/लिखना, बिना शब्दों/जैसे मैं पैदा हो रहा होऊँ।''

पत्रिका के **अंक : 106** में सुरेश सलिल द्वारा अंग्रेजी से अनूदित इतालवी रेनेसाँस शीर्षस्थ कला-व्यक्तित्व माइकेल एंजेलो की कविताओं का संकलन है। 16वीं सदी के चित्रकार और मूर्तिकार माइकेल एंजेलो को यूरोप के साहित्य-जगत में पहचान 1960 ई० में मिली, जब ई०एन० गिरार्डी के सम्पादन में उनकी कविताओं का संस्करण प्रकाशित हुआ। उनकी कविताएँ भौतिक जीवन के संघर्षों, चर्च-राज्य की हृदयहीनता, धार्मिक-कदाचार जैसे सामाजिक सन्दर्भों से लेकर प्रेम ईश्वर, मृत्यु और मुक्ति तक फैली सघन इन्द्रियबोध और दार्शनिक-आध्यात्मिक भंगिमाओं से समृद्ध है। × × ''चढ़ाई कठिन है, जवाब दे रही है हिम्मत/और अधबीच में ही फूलने लगी है मेरी साँस/निस्सन्देह, इतना उदात्त है तुम्हारा सौन्दर्य/कि आप्लावित कर दे आनंद से मेरे हृदय को/किंतु, तब रससिक्त होने हेतु तुम्हारी रमणीयता से/अभिलाषा करता हूँ मैं यह भी/कि जहाँ तक मेरी पहुँच है/वहाँ तक तो तुम उतरो ही।''

वर्तिका : (हिन्दी त्रैमासिक, प्रवेशांक, जुलाई-सितम्बर 08), सम्पादक : महाश्वेता देवी, अरुणकुमार त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, 21ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

वाक् (त्रैमासिक, अंक 8, 2008) : सम्पादक : सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, 21ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

नई धारा (जून-जुलाई 2008) : सम्पादक : प्रमथराज सिंह, सूर्यपुरा हाउस, बोरिंग रोड, पटना-800001

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 9 **सितम्बर 2008** **अंक : 9**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)